हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

जनवरी, 2016 वर्ष 14 अंक 11

हज़रत हसन को देखो भूलो ना

करो इबादत रब की केवल और किसी को पूजो ना
माँगो जो कुछ उसी से माँगो और किसी से माँगो ना
नबी मुहम्मद प्रिय हैं रब के उनको समझो अन्तिम दूत
दीन की बातें उन्हीं से सीखो और किसी से सीखो ना
रब से माँगो उन पर रहमत और पढ़ो तुम उन पे सलाम
अमल सहाबा का तुम देखो और किसी का देखो ना
नबी के खुलफा पाँच हुए हैं उन पर रब की रहमत हो
बूबक्र, उमर, उस्मान, अली और हसन को देखो भूलो ना
तीस पे होगी पूरी ख़िलाफत क़ौल नबी का शाहिद है
सुल्हे ह़सन पर तीस हैं होते गिन लो देखो चूको ना

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 18/-
वार्षिक	₹ 200/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 यु.एस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	03
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	05
इस्लाम और सामाजिक जीवन	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	06
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	08
जोश की जगह होश	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	13
हज के बाद ज़िन्दगी में तब्दीली	मौलाना अब्दुल माजिद दरयाबादी रह0	14
हिन्दोस्तान में तीन बातों की	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	17
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	18
ला महदूद क़ायनात और इंसान	इं0 जावेद इक़बाल	20
उर्दू सीखें (पद्य)	अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी नसीराबादी	23
लोक तंत्र दिवस	इदारा	24
गरीब किसान और बनिया	इदारा	26
इन्सानी ग़िज़ा (मानव आहार)	इं0 जावेद इक़बाल	29
माँ की ममता (पद्य)	मोलवी इस्माईल मेरठी	33
लौकिक त्रुटियाँ	नज्मुस्साकिब अब्बासी नदवी	34
नारी और कुर्आन	डॉ0 फरहत हुसैन	35
उर्दू सीखिए	इदारा	40

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर-ए-आले इमरानः

यह सूरः मदीने में नाज़िल हुई और इसमें दो सौ आयतें और बीस रुकूअ़ हैं यह कुर्आन करीम की तीसरी सूरत है, पहली सूरत सूरः फातिहा है जो पूरे कुर्आन का सार है उस सूरः के आखिर में सत्य मार्ग की हिदायत मांगी गई थी, उसके बाद दूसरी सूरः "सूरः बकरः" उतार कर इस ओर इशारा किया गया कि सत्य मार्ग की दुआ़ कबूल करके अल्लाह ने यह कुर्आन अवतरित कर दिया, जो सत्य मार्ग की हिदायत करता है, फिर सूरः बकरः में जियादा तर शरअ़ी आदेशों का संक्षेप और विस्तृत बयान आया, जिसके अन्तर्गत जगह जगह इन्कार करने वालों और उनसे मुकाबले का भी ज़िक्र आया, और उस सूरत को दुआ के इस वाक्य पर खतम किया गया कि "ऐ अल्लाह तू हमारा मालिक है इन्कार करने वालों के मुक़ाबले में हमारी मदद कर" जिसका उद्देश्य इंकार करने पर विजय प्राप्त करने की दुआ, इसकी तुलना से आले इमरान में आम तौर पर इन्कार करने वालों के साथ मुआ़मलात और हाथ और ज़बान से उनके मुकाबले में संघर्ष करने का बयान है, जो मानो सूरः बकरः की आखिरी आयत की व्याख्या तथा विवरण है।

अनुवाद- अलिफ़. लाम. मीम.[1] अल्लाह उसके अलावा कोई माबूद नहीं वह ज़िन्दा है जो जगत व्यवस्था को संभाले हुए है[1][2] ऐ नबी! उसने तुम पर यह किताब उतारी, जो सत्य ले कर आई है[2] और उन किताबों की पुष्टि कर रही है जो पहले से आई हुई थी इससे पहले वह इन्सानों के मार्गदर्शन के लिए तौरात और इंजील उतार चुका है[3] और उसने वह कसौटी उतारी है (जो सत्य और असत्य का अन्तर दिखाने वाली है)[4] अब जो लोग अल्लाह के आदेशों को स्वीकार करने से इन्कार करें, उनको निश्चित रूप से सख्त सजा मिलेगी। अल्लाह अपार शक्ति वाला है और बुराई का बदला देने वाला है[5][3.4]।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

पहली आयत यानी अलिफ. लाम. मीम., यह शब्द कुर्आन के मुतशाबिहात शब्दों में से है, जिसके मानी अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मध्य एक राज़ है जिसका विवरण इस रुकूअ़ के आखिरी आयतों में आया है।

1. नजरान क़बीला के साठ ईसाईयों का एक सम्मानित प्रतिनिधि मण्डल नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाजिर हुआ, यह प्रतिनिधि मण्डल बारगाहे रिसालत में बड़े ही गर्व तथा गौरव से

हाजिर हुआ, और विवादित समस्याओं में हुज़ूर से बात की, जिस की पूरी तफ्सील मो0 बिन इस्हाक की सीरत में मौजूद है, सूरा "आले इमरान" का शुरुआती हिस्सा तकरीबन अस्सी नब्बे आयतों तक इसी वाकिये में नाज़िल हुआ, ईसाईयों का पहला और मूल अक़ीदा यह था कि हज़रत ईसा अलै0 स्वयं खुदा या खुदा के बेटे या तीन खुदाओं में से एक हैं– इस सूरा की इस पहली आयत में तौहीदे खालिस का दावा करते हुए खुदा तआला की जो सिफत "हय्यूं क़य्यूम" बयान की गई है वह ईसाईयों के इस वाद को साफ तौर पर गलत ठहराती है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दौराने मुनाज़रा उनसे फरमाया क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह तआला जिन्दा है जिसे मौत नहीं आ सकती, उसी ने तमाम मखलूक़ात को पैदा किया और सामाने बक़ा पैदा करके उनको अपनी कुदरत से थाम रखा है।

2. यानी कुर्आन–ए–करीम जो बिल्कुल हिकमत के मुताबिक बिल्कुल समयानुसार सच्चाई और न्याय को अपने अन्दर ले कर उतरा।

3. यानी कुर्आन अगली किताबों की तसदीक़ करता है और अगली किताबें (तौरेत व इंजील) पहले से कुर्आन और उसके लाने वाले की ओर रहनुमाई कर रही थीं और अपने अपने ज़माने में मुनासिब आदेश व निर्देश देती थीं, मानो बतला दिया कि "खुदा या खुदा का बेटा" का अक़ीदा किसी आसमानी किताब में मौजूद न था, क्योंकि दीन के मूल सिद्धान्त कुल आसमानी किताबों में समान हैं, मुश्रिकाना अ़क़ाइद की तालीम कभी नहीं दी गई।

4. अर्थात हर काल के मुनासिब ऐसी चीज़ें उतारीं जो हक व नाहक़ हराम व हलाल और झूठ व सच के मध्य न्याय करने वाली हों उसमें कुर्आने क़रीम, आसमानी किताबें नबियों के मोजिज़े सब दाखिल हो गये और इधर भी इशारा हो गया कि जिन मसाइल में यहूद व नसारा झगड़ते चले आ रहे हैं उन मतभेदों का फैसला भी कुर्आन के द्वारा कर दिया गया।

5. अर्थात ऐसे मुजरिमों को न सज़ा दिये बिना छोड़ेगा न वह उसके शक्तिशाली प्रभुत्व से छूट कर भाग सकेंगे इसमें भी ईसा अलैहिस्सलाम के खुदा या खुदा का बेटा होने के अकीदे के इंकार की ओर इशारा हो गया, क्योंकि जो इख्तियार व इक़तिदार खुदा के लिए साबित किया गया, जाहिर है वह ईसा अलैहिस्सलाम में नहीं पाया जाता मालूम हुआ कि एक कमज़ोर मखलूक़ को वास्तव में क़ादिरे मुतलक़ का बेटा कहना, बाप और बेटे दोनों पर सख़्त ऐब लगाना है।

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

प्यारे नबी की प्यारी बातें

शुक्र की फज़ीलत

—अमतुल्लाह तस्नीम

हज़रत जिब्रील अलै0 का शुक्रः–

हज़रत अबू हूरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मेअ़राज की रात में मुझ को दो भरे हुए प्याले दिये गये, एक में शराब थी और दूसरे में दूध, मैंने दोनों पर नज़र डाली, फिर दूध ले लिया, जिब्रली अलै0 ने कहा सब तअ़रीफ अल्लाह के लिए है जिसने आपको फितरत (प्रकृति) की हिदायत की, अगर आप शराब लेते तो आपकी उम्मत गुमराह हो जाती। (मुस्लिम)

बगैर अलहमदुलिल्लाह के काम अधूरा हैः– हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया जो शख़्स किसी महत्वपूर्ण काम के शुरु में अलहम्दुलिल्लाह न कहेगा तो काम अधूरा रह जायेगा। (अबूदाऊद)

बैतुल हम्द (तारीफ का घर):–

हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अल्लाह के किसी बन्दे के लड़के का देहांत होता है तो अल्लाह तआ़ला अपने फरिश्तों से इरशाद फरमाता है तुमने मेरे बन्दे के लड़के की रूह क़ब्ज़ कर ली? फरिश्ते अर्ज करते हैं, हाँ! अल्लाह तआ़ला इरशाद फरमाता है तुमने मेरे बन्दे के लखते जिगर की रूह क़ब्ज़ कर ली? फरिश्ते अर्ज करते हैं, हाँ, अल्लाह तआला फरमाता है कि उस समय मेरे बन्दे ने क्या कहा– फरिश्ते अर्ज करते हैं उसने तेरी तअ़रीफ की और "इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन" कहा फिर अल्लाह तआ़ला फरमाता है मेरे बन्दे के लिए जन्नत में एक घर बनाओ और उसका नाम बैतुल हम्द रखो। (तिर्मिज़ी)

खाने पीने पर अल्लाह का शुक्रः– हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अल्लाह तआ़ला उस बन्दे से खुश होता है जो खाना खाता है तो अल्लाह का शुक्र अदा करता है पानी पीता है तो अल्लाह का शुक्र अदा करता है। (मुस्लिम)

दुरूद की फजीलत

एक बार दुरूद के बदले में दस रहमतेंः–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि0 से रिवायत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो आदमी मुझ पर एक बार दुरूद भेझता है अल्लाह तआ़ला उस पर दस बार रहमत भेजता है। (मुस्लिम)

दुरूद की अधिकता आप सल्ल0 से निकटता का ज़रीआ़ हैः–

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया क़ियामत में वह लोग मुझसे ज़ियादा करीब होंगे जो मुझ पर सबसे ज़ियादा दुरुद भेजेंगे। (तिर्मिज़ी)

शेष पृष्ठ .....39...पर...

इस्लाम और सामाजिक जीवन

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी

इस्लाम शान्तिमय समाज का निर्माण करता है और शान्ति को प्रिय रखता है, वह स्पष्ट आदेश देता है कि पृथ्वी पर उपद्रव मत करो, इस्लाम में सबसे बड़ा पाप और सबसे बड़ा अपराध शिर्क (अनेकेश्वरवाद) है अतः वह सर्व प्रथम शिर्क से रोकता है, फिर माता पिता (वालिदैन) के साथ सदव्यवहार का आदेश देता है, और कहता है सन्तान का वद्य मत करो, तुमको भी आजीविका देगा और तुम्हारी आने वाली सन्तान को भी, बच्चियों के जन्म पर दुखी होने को अप्रिय बताया है, बच्चों को मार देने को महा अपराध बताया है। दुष्कर्मों के निकट जाने से भी रोका है न उनके पास खुले में जाओ न छुपे में, अकारण किसी की जान लेने को वर्जित ठहराया। अनाथों का माल बेजातौर पर खाने से रोका है यहां तक कि उसे आग खाने के समान बताया। कारोबार में नाप तौल में कमी करने से सख्ती से रोका है। किसी को वचन दो तो उसे अवश्य पूरा करो, यह समस्त शिक्षाएं कुर्आन व हदीस में मौजूद हैं, हम सोचें अगर इन सब बातों को अपनाया जाये तो क्या समाज में शान्ति न आएगी? अवश्य आएगी।

इस्लाम बताता है कि समस्त सृष्टि अल्लाह का कुंबा (कुल) है जो अल्लाह के कुंबे के साथ जितना अच्छा व्यवहार करेगा वह अल्लाह को उतना ही प्रिय होगा, इस्लाम कहता है कि सभी ईमान वाले परस्पर भाई भाई हैं, जब कभी शैतानी प्रयास से परस्पर खटपट हो जाये तो आपस में मेल करा दिया करो।

इस्लाम ने समाज में शान्ति का पूरा प्रबन्ध किया है, आदेश है कि लोग अपने भाई की हंसी न उडाया करें, इससे उनको कष्ट होता है और समाज में अशांति पैदा होगी, ऐसे लोगों को सोचना चाहिए कि वह जिन लोगों की खिल्ली उड़ा रहे हैं हो सकता है वह अल्लाह के निकट तुम से अच्छे हों।

समाज में देखा गया है कि एक दूसरे को ताना देते हैं, ऐसी बात कहते हैं जिससे उनको दुख हो, इस्लाम ने इससे भी रोका है कि इससे समाज की शान्ति भंग होगी, समाज में कुछ लोग शैतान के बहकावे में आकर अपने को बड़ा और अच्छा समझते हुए दूसरे को बुरे नामों से पुकारते हैं, किसी को हे लंगड़े! कह कर पुकारते हैं तो किसी को हे काने! कह कर आवाज दी जाती है, इस तरह के नामों से जिस को पुकारा जाता है उसका दिल दुखता है और समाज में अशांति पैदा होती है। इस्लाम ने इससे रोका है और साफ आदेश दिया कि किसी को बुरे नाम से मत

पुकारो। और बताया कि यह बड़ा पाप है, एक मुसलमान ऐसा करे तो यह तो बहुत ही बुरा है। और बताया कि ऐसा पापी यदि अल्लाह से क्षमा न मांग लेगा तो उसका नाम अत्याचारों में लिखा जायेगा और वह अत्याचरों की सज़ा भोगेगा।

शैतान समाज में एक विकार यह फैलाता है कि लोग एक दूसरे के बारे में केवल अनुमान से बुरा गुमान करने लगते हैं। इससे भी समाज में अशांति पैदा होती है अतः इस्लाम ने इसे भी पाप बताया है और किसी के विषय में गलत अनुमान से बुरा गुमान रखने से रोका है। इसी प्रकार एक दूसरे की अनावश्यक टोह में रहते हैं इससे भी इस्लाम में रोका गया है।

शैतान के प्रयास से एक बड़ा विकार समाज में यह है कि लोग पीठ पीछे उसकी बुराई करते हैं यह बहुत बड़ा दोष है अगर उसमें कोई बुराई हो और आपको उससे सहानुभूति है तो उससे मिल कर उससे उस विकार को दूर करने का उपाय कीजिए परन्तु उसके पीठ पीछे दूसरों से उसकी बुराई करेंगे तो समाज में अशांति पैदा होगी। इस्लाम में तो अपने भाई की पीठ पीछे बुराई को अपने मृतक भाई के मांस खाने के समान बताया गया है। इस पाप को उर्दू में गीबत कहते हैं। अतः हमको चाहिए कि हम गीबत से दूर रहें। ताकि समाज शांतिमय रहे।

बहुत से लोग अपने कुल (खान्दान) पर घमण्ड करते हैं और दूसरों को नीच समझते हैं, इस्लाम में इससे रोका गया है, और बताया गया है कि अल्लाह ने यह जात पात तथा कुल स्वयं बनाए हैं ताकि आपस में पहचान हो सके, अल्लाह के सबसे करीब वह है जो सबसे अधिक संयमी है, अल्लाह से डरने वाला है।

इस्लामिक शिक्षाओं में से यह कुछ शिक्षाएं सामाजिक जीवन से सम्बंधित प्रस्तुत हुई, सोचिए क्या इन बातों को जीवन में लाने के पश्चात भी समाज में अशान्ति रहेगी, कदापि नहीं, रहे वह लोग जो बाज़ारों, सड़कों, धर्म स्थलों आदि में बम बिस्फोट करके बे गुनाहों की जानें लेते हैं और समाज में आतंक फैला कर समाज को भयभीत करते हैं उनका और उनके कुकर्मों का इस्लाम से दूर का भी सम्बन्ध नहीं वह तो शैतान के बहकावे में हैं, अल्लाह उन से समाज को सुरक्षित रखे। और उनको हिदायत दे। साथ ही यह भी समझ लेना चाहिए कि शान्ति प्रिय मुसलमानों पर जो हमारे वतनी भाई अपनी जिहालत (जड़ता) से अत्याचार करते हैं, उनको मालूम रहना चाहिए कि वह अल्लाह की पकड़ से बच नहीं सकते वह इस संसार में भी आपदाओं का शिकार होंगे और अगला जीवन तो उनके लिए बहुत बुरा होगा, अल्लाह उनको समझ दे और सत्य मार्ग दिखाए।

❖❖❖

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

—अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

अतः उसके मुकम्मल होने का नमूना क़यामत तक सामने रहे। अब इसमें किसी तरमीम (संधोधन) की ज़रूरत पेश नहीं आना है। क़यामत तक इंसानों की सलाह व फलाह (अच्छाई और भलाई) के लिए बिल्कुल काफ़ी है। इसलिए कि वह अल्लाह सारे संसार के पालनहार का दिया हुआ दीन है, जो इंसानों के मिज़ाज और ज़रूरतों को शुरू से आख़िर तक जानने वाला है बल्कि बताने वाला है। इसी लिहाज़ से उसको मुकम्मल फरमा दिया गया और अल्लाह तआला की ओर से उसकी हिफाज़त का वादा भी फरमा दिया गया।

"बेशक यह (किताब) नसीहत हमने ही उतारी है और हम ही इसके रक्षक हैं"। (सूरः हिज्र :9)

दूसरी जगह फरमायाः

"आज हमने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन पूरा कर दिया और अपनी नेमतें (वरदान) पूरी कर दीं और तुम्हारे लिए इस्लाम को बतौर दीन पसंद किया।" (सूरः माइदा— 3)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद जिन सज्जनों को यह सिलसिला चलाना था अर्थात आपके करीबी साथियों की जमाअत इस्लाम की वह आदर्श जमाअत बनी जिसने नबी की करनी और कथनी को अच्छी तरह समझा था और वह इसके लिए अपनी मर्जी और इच्छा को मिटा चुके थे और अपने नबी का दर्पण बन चुके थे। वह कोई ऐसी बात नहीं कह सकते थे और न कर सकते थे जो अल्लाह के रसूल की मर्ज़ी के विरुद्ध हो, यह जमाअत जमाअते सहाबा कहलाई, जिनकी संख्या हज़ारों से अधिक हुई।

अमरीकी सैनिक इतिहासकार श्री रिचर्ड जाबेल ने जिन्होंने अमरीका के विभिन्न महत्वपूर्ण राजकीय विभागों तथा अमरीकन गुप्तचर एजेन्सी सी0आई0ए0 में कर्मचारी के रूप में काम किया है और विभिन्न शीर्षकों पर 40 पुस्तकें लिखी हैं हाल ही में एक नई तहकीकी किताब (अन्तेशणात्मक पुस्तक) लिखी है जिसमें उन्होंने स्वीकार किया है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर प्रकार से पूर्ण पुरुष (मर्दे कामिल) और जीनियस इंसान हैं। विशेष कर उक्त महोदय ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सैन्य तथा नेतृत्व की क्षमता और प्रशिक्षण योग्यता पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पहले इस्लामी नायक हैं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने मानने वालों की एक ऐसी आदर्श जमाअत तैयार कर दी जिसने बाज़िनतीनी और ईरानी साम्राज्य फतह कर लिया और ऐसी जमाअत तैयार की जिसका इस बात पर पक्का और पूर्ण ईमान व यकीन था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं और अपने नबी व रसूल की बताई हुई हर बात पर कारबंद (कर्मनिष्ठ) थे, मगर ऐसी संगठित, त्याग

व बलिदान की भावना से भरपूर और अपने नायक व उपदेशक के बताए हुए सिद्धान्तों और जीवन व्यवस्था पर सख्ती से कारबन्द जमाअत न होती तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु के पश्चात इस्लाम का विकास न होता। मुहम्मद की मृत्यु के पश्चात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियों का फितन–ए–इरतिदाद (धर्मपरित्याग उपद्रव) पर काबू पा लेना और मुरतद् (विधर्मी) कबीलों को पुनः इस्लाम पर जमा देना मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरबियत और उनके नायक होने की खुली दलील है।

रिचर्ड जाबेल ने आगे लिखा है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने साथियों और ईमान लाने वालों के दिल व दिमाग में यह बात भली भांति बिठा दी और पक्की कर दी की वह भूमण्डल पर अल्लाह के आदेश को लागू करने वाले हैं। यह इतिहास में पहली घटना है कि कोई जमाअत (दल) यह ईमान व विश्वास रखती हो कि वह भूमण्डल पर अल्लाह के आदेशों को लागू कर रही है। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो जमाअत तैयार की वह खानदानी, क़ौमी, नस्ली, कबाएली, इलाकाई (क्षेत्रीय) और रंग व रूप की बुन्याद पर नहीं बल्कि वह ख़ालिस (शुद्ध) दीने इस्लाम की बुन्याद पर मुत्तहिद (एकजुट) थी[1]''।

अल्लामा सय्यद सुलैमान नदवी रह0 लिखते हैं:

''इस्लाम के शिक्षक (हज़रत मुहम्मदु र्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सम्बन्ध में केवल यही दावा नहीं कि वह लोगों को किताब व हिकमत की बातें सिखाते और अल्लाह के आदेश को सुनाते हैं बल्कि यह भी कि वह उनको अपने फ़ैज़ व असर से पाक व साफ़ व मुसफ़्फ़ा (शुद्ध) भी बना देता है, वह नाक़िसों को कामिल (अपूर्ण को पूर्ण) गुनाहगारों को नेक, अंधों को बीना (आंख वाला) और तारीक दिल को रौशन दिल (अंधकारपूर्ण हृदय को प्रकाशमान हृदय) बना देता है। अतः जिस समय उसने अपने जीवन का कारनामा समाप्त किया। कम से कम एक लाख इंसान जो नैतिक पतन के अन्तिम बिन्दु पर था, 23 वर्ष बाद वह उच्च नैतिकता की चरम सीमा को पहुंचा, जिसकी बुलन्दी तक कोई सितारा आज तक न पहुंच सका।''

यदि किसी शिक्षक की परिपूर्णता में यह तासीर भी हो फिर भी यह देखना है कि इस विश्व की परिपूर्णता और प्रबन्ध–व्यवस्था के लिए एक ही योग्यता के इंसानों की नहीं बल्कि सैकड़ों विभिन्न योग्यता वाले इंसानों की आवश्यकता है, नैतिक शिक्षा के दूसरे शिक्षकों की पाठशालाओं पर एक नज़र डालने से मालूम होगा कि वहां केवल एक विषय के विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के प्रशिक्षण कक्ष में सैनिक शिक्षा के अतिरिक्त कोई और विषय सामने नहीं। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की पाठशाला में क्षमा के अतिरिक्त कोई और पाठ नहीं। लेकिन मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि

1. पत्रिका ''अल–मुजतमा'' अंक 1796, 5 अप्रैल 2008 ई0

व सल्लम की उच्च पाठशाला में आकर देखो तो मालूम होगा कि यह सार्वजनिक विद्यालय है, जिसमें मानव विकास की हर प्रतिभा फल फूल रही है। स्वयं शिक्षक अपने व्यक्तित्व में एक पूर्ण विश्वविद्यालय है जिसके अन्दर कला व विद्या का हर विभाग अपनी जगह स्थापित है। हर प्रकार और रुचि के विद्यार्थी आते हैं और अपनी अपनी क्षमता और आम रुचि के अनुसार कमाल (दक्षता) प्राप्त करते हैं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हैसियत एक इंसान, एक बाप, एक पति, एक दोस्त, एक गृहस्थ, एक कारोबारी (व्यापारी), एक शासक, एक न्यायमूर्ति, एक सेनापति, एक बादशाह, एक अध्यापक, एक मुरशिद (उपदेशक) एक वाइज़, एक ज़ाहिद व आबिद और आख़िर एक पैग़म्बर की नज़र आती है। यह तमाम इंसानी तबके आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने शागिर्द (शिष्य) बन कर बैठते हैं और अपने अपने व्यवसाय व कला के अनुसार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शिक्षा से लाभांवित होते हैं।

नबी के शहर की इस बड़ी पाठशाला को ग़ौर से देखो जिसकी छत खजूर के पत्तों से और खम्भे खजूर के तनों से बनाए गए थे और जिसका नाम मस्जिद नबवी था, उसके अलग अलग गोशों (कोनों) में इंसानी जमाअतों के अलग अलग दर्जे खुले हुए थे। कहीं हज़रत अबूबकर रज़ि0 व उमर रज़ि0, उस्मान रज़ि0, अली रज़ि0, जैसे फरमारवा (शासक) तालीम हासिल कर रहे हैं। कहीं तलहा रज़ि0 जुबैर रज़ि0, मआविया रज़ि0, सअद बिन मआज़ व सईद बिन जुबैर रज़ि0 जैसे सूझ बूझ वाले लोग हैं कहीं खालिद रज़ि0, अबू उबादा रज़ि0 सअद बिन अबी वक्कास रज़ि0 और अम्र बिन आस जैसे सेनापति हैं। कहीं वह हैं जो बाद में प्रान्तों के शासक, अदालतों के जज और क़ानून के विधायक बने। कहीं आबिदों व ज़ाहिदों का जनसमूह है जिनके दिन रोज़ों और रातें नमाज़ों में कटती हैं। कहीं अबूज़र रज़ि0 व सलमान रज़ि0 व अबूदरदा रज़ि0 जैसे वह ख़िरकापोश (गुदड़ी पहनने वाले) जो मसीहे इस्लाम कहलाते हैं। कहीं हज़रत अली रज़ि0, हज़रत आयशा रज़ि0, हज़रत इब्न अब्बास रज़ि0, हज़रत इब्न मसूद रज़ि0, हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि0 जैसे फकीह व मुहद्दिस थे, जिनका काम इल्म की खिदमत और इशाअत था। एक जगह गुलामों की भीड़ है तो दूसरी जगह मालिकों की सभा है, मगर उनमें दिखावटी आदर व दुन्यावी सम्मान का कोई अन्तर नहीं पाया जाता। सब समानता के एक ही स्तर पर और सच्चाई की एक ही शमा के गिर्द परवानावार

जमा हैं। सब पर तौहीद (एकेश्वरवाद) का नशा छाया और सीनों में हक़ परस्ती (सत्यवाद) का एक ही वलवला मौजें ले रहा है और सब नैतिकता के एक ही पवित्र आईने का प्रतिबिम बनने की कोशिशों में लगे हुए हैं[1]।

साबिक़ीने अव्वलीन और अशर-ए-मुबश्शराः-

शुरु में जो लोग ईमान लाए उनको अपने ईमान लाने पर जो जुल्म और दुश्मनी झेलनी पड़ी वह असाधारण हद तक ज़ियादा थी और बरसों जारी रही और इससे सम्बन्ध ऐसे लोगों को पड़ रहा था जो अपने खानदान के सम्मानित लोग थे और इससे पहले तक वह मामूली अपमान अथवा अत्याचार किसी क़ीमत पर बर्दाशत नहीं कर सकते थे चाहे लड़ाई की नौबत आ जाए लेकिन उन ईमान लाने वालों को हुक्म यही था कि बर्दाशत करो और उनको यह भी नहीं मालूम था कि यह कब तक बर्दाशत करना है और यह कभी ख़त्म होगी भी कि नहीं। ऐसी सूरत में ज़ब्ते नफ़्स (मनोविग्रह) और बर्दाशत पत्थर जैसे दिल रखने वाले ही कर सकते हैं या ऐसे कमज़ोर और बेहैसियत लोग जो किसी भी जुल्म (अत्याचार) का मुक़ाबला नहीं कर सकते। लेकिन यह ईमान लाने वाले कुरैशी बदला लेने की क्षमता रखते थे, लेकिन हुक्मे खुदावंदी की वजह से बर्दाशत कर रहे थे। अतः इसी लिहाज़ व मुक़ाम से उनका रुतबा बढ़ा और "साबिक़ीने अव्वलीन" (ईमान की पुकार पर सबसे अव्वल आगे बढ़ने वाले) कह कर उनका रुतबा बुलन्द क़रार दिया गया कुरआन मजीद में इरशाद हैः—

"जिन लोगों ने पहल की (यानी सबसे पहले ईमान लाए) मुहाजीरीन (यानी अल्लाह की राह में वतन छोड़ने वाले) और अन्सार (यानी जो उनके मददगार बने) में से भी और जिन्होंने उपकार के साथ उनकी पैरवी की, खुदा उनसे खुश है और वह खुदा से खुश हैं और उसने उनके लिए बाग़ात तैयार किये हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं और हमेशा उनमें रहेंगे यह बड़ी कामयाबी है।"

(सूरः तौबा—100)

और दूसरी जगह इरशाद हैः—

"फतह मक्का से पहले जिस किसी ने ख़र्च किया और लड़ाई में हिस्सा लिया, तुममें से कोई दूसरा उनके बराबर का नहीं हो सकता। इनके लिए अल्लाह के पास बड़े बड़े दर्जे हैं उन लोगों के मुकाबले में जिन्होंने बाद में अल्लाह की राह में माल खर्च किया और लड़ाई में शामिल हुए। नेक बदले का वादा तो अल्लाह ने हर एक के लिए कर रखा है और तुम जो भी काम करते हो अल्लाह को उसकी पूरी ख़बर है।"

(सूराः अल हदीद—10)

यह वास्तविक्ता है कि शुरु में जो लोग ईमान लाए

---

1. सीरतुननबी—अल्लामा शिबली नोमानी व सय्यद सलैमान नदवी 6/24—25

उनको ज़ियादा सख़्त हालात का सामना करना पड़ा और उन्होंने पूर्ण रूप से आज्ञा पालन और प्रेम का सबूत दिया, जो ऊँचे दर्जे का आदर्श था। यह मदनी ज़िन्दगी से पहले का ज़माना था, जिसमें उनको अपने ही रिश्तेदारों से बाइकाट का सामना करना पड़ा और उनकी ओर से नाना प्रकार के कष्ट उठाने पड़े। फिर दीन ही की वजह से अपना घर बार, बाल बच्चे और वतन छोड़ना पड़ा। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल पर उनके इस गहरे सम्बन्ध और कुर्बानी का बड़ा असर पड़ा था। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह के हुक्म से उनमें से बहुत से लोगों का इज़हार फरमाया। इनमें दर्जा अव्वल के हजरात अशर–ए–मुबश्शरा कहलाए। यह दस हज़रात हैं जिनको एक साथ जन्नती होने की खुशखबरी सुनाई गयी। फरमायाः–

"हज़रत अबूबक्र जन्नत में, उमर जन्नत में, उस्मान जन्नत में, अली जन्नत में, तल्हा जन्नत में, जुबैर जन्नत में, अब्दुर्रहमान बिन औफ जन्नत में, सअद जन्नत में, सईद जन्नत में, और अबू उबैदा बिन जर्राह जन्नत में।"

इनके अलावा और भी दूसरे कई सहाबा के बारे में ज़ाती तौर पर बशारत के जुमले इरशाद फरमाये हैं। ग़ज़व–ए–बद्र में शरीक होने वालों और बैअत–ए–रिज़वान में शरीक होने वालों के लिए भी बशारत दी। इसी तरह कुछ सहाबी औरतों के बारे में भी बशारत दी। और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इस दीन के सिलसिले में कुछ भी फ़रमाना अल्लाह तआला के हुक्म ही से होता था। इन अहम हज़रात के सम्बन्ध में यह बशारतें मौक़े मौक़े से नाम लेकर दी गयीं। सामान्यतः बशारत दूसरे लोगों को भी दी गयी। कुरआन मजीद में फरमायाः– "रज़ीअल्लाहु अनहुम व रजूअन्हु" (अल्लाह तआला उन सबसे राज़ी व खुश है और यह भी अपने खुदा से राज़ी व खुश हैं) और खुद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी ज़बान मुबारक से बशारत दी। कुर्आन मजीद में आपकी हर कही बात के बारे में यह फरमाया गया कि आप अपनी तरफ़ से नहीं कहते, "वही" की बिना पर कहते हैं, जो आप पर भेजी जाती हैः–

"और न खुवाहिशे नफ़्स से मुँह से बात निकालते हैं ये तो हुक्मे खुदा है जो उनकी तरफ भेजा जाता है।" (सूरः नज्म–4)

तो यह बशारतें भी "वही" इलाही के अनुसार होती थीं। इस तरह अल्लाह तआला ने उनके जीवन काल ही में उनके जन्नती होने की सूचना दी।

❖❖❖

कंजूसी और दिखावा

और ऐसे लोग भी अल्लाह को पसंद नही हैं जो कंजूसी करते हैं और दूसरों को भी कंजूसी की हिदायत करते हैं। और जो कुछ अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से उन्हें दिया है उसे छुपाते हैं।

और वह लोग भी अल्लाह को ना पसंद हैं जो अपना माल सिर्फ लोगों को दिखाने के लिए खर्चकरते हैं।

(सूरः निसा ३७-३८/४)

जोश की जगह होश इख़्तियार करने की ज़रूरत

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

इस वक़्त हमारी उम्मत को इज्तिमाई तफरिका फिकरी और नज़रियाती सतह पर परागन्दगी का बहुत ज़ियादा साबिक़ा है, इस तरह उम्मत अपने अमली नुक़्त–ए–नज़र और जहानत व नज़रियात के लिहाज़ से इन्तिशार का शिकार है और यह इन्तिशार इसके आपसी टकराव तक पहुंच गया है, और मुख़्तलिफ मौक़ों पर इस्लामी क़दरों को भी नज़र अंदाज कर दिया जाता है। इस ख़राबी व कमज़ोरी को दूर किये बग़ैर दीन व मिल्लत के तहफ़्फ़ुज़ का काम ख़ासा मुश्किल बना हुआ है।

इस मुल्क़ में मुसलमान अक़ल्लीयत में हैं और अक़ल्लीयत जहां भी हो उसको अकसरीयत के मुक़ाबले में ज़ियादा फिक्र व तवज्जुह और मेहनत की ज़रूरत होती है वह गिरोह बन्दियों और सिर्फ जोश और पुरजोर इज़हारे राये पर इक्तिफ़ा करते हुए इस ज़रूरत को हासिल नहीं कर सकते ख़ास तौर पर जबकि ग़ैरों की तरफ से अक़ल्लीयत को कमज़ोर करने का निज़ाम चल रहा हो तो सन्जीदा फिक्र व तवज्जुह की ज़ियादा ज़रूरत होती है, तालीम व ज़राऐ इब्लाग़ अहम तरीन वसाइल की हैसियत रखते हैं, उनको मेहनत करके हासिल किया जा सकता है इसके साथ इजतिमाईयत जो किसी इन्सानी तरक़्क़ी के लिए बड़ी मज़बूत ताक़त होती है वह हिम्मत व क़ुरबानी की भी तालिब होती है इसके लिए ज़रूरी है कि हम आपस में एक दूसरे के इख़्तिलाफ़ को मुखालफ़त का ज़रिआ न बनने दें और जब हमारी मिल्ली ताक़त मुजतमअ रहेगी, तो उसको कोई आसानी से तोड़ नहीं सकेगा। लेकिन मुसलमानों में इख़्तिलाफ़ मुख़ालिफ़त की हद तक पहुंच जाता है इस वक़्त उम्मते मुस्लिमा इसका शिकार है जिससे नुक़सान पहुंच रहा है। इस तरह हमारे मुख़्तलिफ़ कामों में जोश, होश की जगह ले लेता है, इससे हमारी अमली ताक़त को नुक़सान पहुंचता है और हालात का मुक़ाबला करने में कमज़ोरी आ जाती है। हमारे बहुत से मसाइल होश की जगह जोश आ जाने की बिना पर ख़राब हुऐ हैं और नाकामी हुई बहुत से मौक़ों पर जो कोशिश खामोशी के साथ हो सकती है, वह ऐलान व तशहीर के साथ करने में नुक़सान रसां हो जाती है। इसलिए हिकमते अमली को बुन्याद बनाना चाहिए और हिकमत इख़्तियार करने की हमको हमारे दीन की तरफ से ताकीद मिली है।

❖❖❖

हज के बाद ज़िन्दगी में तब्दीली

—मौलाना अब्दुल माजिद दरयाबादी रह0

मौलाना अब्दुल माजिद दरयाबादी रह0 ने अपने सफरे हज की कुछ तफसील "हकीमुल उम्मत नुकूशो तअस्सुरात" में तहरीर फरमाई है हज से वापसी पर एक ख़त हज़रत अक़दस हकीमुल उम्मत मौलाना मुहम्मद अशरफ अली थानवी रह0 के नाम तहरीर फरमाते हैं:—

अल्लाह के फ़ज़्लो करम और आप हज़रात की दुआ की तवज्जो से हज तो जूँ तूँ नसीब हो गया लेकिन लिल्लाह दुआ फरमाइये कि उन सब बेहूदगियों के बावजूद अल्लाह तआला उस हज को कुबूल फरमाऐं।

मदीना मुनव्वरा में मालूम होता था कि हर नाजाइज़ ख्वाहिश पर किसी ने मुहर लगा दी। महजूबो नादिम हूँ कि तोहफा व तहाइफ़ के किस्म में कोई शै खिदमत वाला के लाइक़ न ला सका—

हज़रत अक़दस हकीमुल उम्मत थानवी रह0 ने जवाब देते हुए तहरीर फरमाया—

1. दिल से दुआ है, उन हालात को आप बे सरोपा और मूजिबे तअस्सुफ फरमा रहे हैं और मैं उन पर मसरूर हूं, इसलिए कि उन्हीं हालात से ये हज आ़रीफाना हो गया, वरना आक़िलाना होता, आ़शिक के हिस्से में तो नाकामी और ना मुरादी ही है, आ़शिक़ को कभी सेरी और तसल्ली नहीं होती परेशानी कभी जुदा नहीं होती हज करके अगर ये समझा जाता कि हज किया तो उज्ब था और अब ये समझना कि क्या हज किया, यही तो अ़ब्दियत और फना है और अगर बिल्फर्ज़ कोताही है भी तो उस का तदारुक इस्तिग़फार से सहल है और उ़ज्ब (खुशपसंदी) का कोई तदारुक ही नहीं करता उसका तो पता ही नहीं लगता और मदीना मुनव्वरा में फना की शान खुद ही महसूस हो गयी हत्ता कि शौक़ भी फना हो गया, हैबत अफ़ज़ल है, शौक़ से बरकत जाहिर है, अब इस बरकत को याद रख कर उसको बाक़ी रखा जाये। अल्लाह अल्लाह क्या वह तोहफ़ा तहाइफ कुरबानी और दुआ से ज़ियादा कीमती होता इस वक़्त तो इस एहसान का बदला मेरे ज़िम्मे है, कि कोई तोहफ़ा पेश करुँ और नादारी ही नहीं कम हिम्मती है, इसलिए दुआ पर इक्तिफा करता हूँ— (हकीमुल उम्मत नुकूश व तअस्सुरात पेज नं0 57)।

हाजी के लिए हज के बाद ज़िन्दगी गुज़ारने में शदीद एहतियातः-

हज की फज़ीलत मालूम हो गयी कि गुज़िशता गुनाह उससे मुआॅफ हो जाते हैं ख़्वाह सब या बाज़, मगर हज के बाद के गुनाह तो मुआ़फ नहीं होते इसलिए हाजी को आइन्दा की एहतियात बहुत ज़रूरी है कि हाजी की हालत एक खास वजह से ज़ियादा खतरनाक है और वजह यह है कि हज़रत मौलाना मुहम्मद क़ासिम रह0 का क़ौल है कि हजरे असवद कसौटी है, उसको छूने से इंसान की

असली हालत ज़ाहिर होती है अगर वाक़ई नेक है तो हज के बाद आमाले सालेहा का उस पर ग़ल्बा होगा, अगर सालेह नहीं है (तबीअ़त में नेकी नहीं) महेज़ तसन्नोअ़ व (तकल्लुफ़) से नेक बना हुआ है तो हज के बाद उस पर आमाले सय्यिआ का ग़ल्बा होगा ये वजह है खतरे की–

खतरे का इलाजः–

और इस खतरे का इलाज ये है कि हाजी हज के ज़माने में अल्लाह से अपने इस्लाहे हाल व इस्लाहे नफ़्स की खूब दुआ करे और हज के बाद आमाले स्वालेहा के शौक़ की दुआ करे और हज के बाद आ़माले स्वालेहा का खूब एहतिमाम करे।

हज के बाद अब ज़िन्दगी ऐसे गुज़ारेः–

हक़ तआ़ला ने अपने नेक बन्दों के जो औसाफ़ कलाम पाक में बयान फरमाए हैं उन सिफात को पढ़िऐ और सुनिए कि वह क्या हैं सबसे पहली जो सिफत (सूरह माइदा) में बयान की गई है वह ये है यानी खुदा को उनसे महब्बत होगी और उनको खुदा से–

देखिए हज़रत सबसे पहले हक़ तआ़ला ने यही सिफत बयान फरमाई है कि वह लोग अहले महब्बत होंगे इस तक़्दीम जिक्र से सिफते महब्बत का सबब से ज़ियादा मुहतम बिशशान होना साहिब होता है इसी से इस्तिदलाल करके मैंने अर्ज़ किया था कि बस दीन में महब्बत ही अस्ल जड़ है यही रास और बुन्याद है।

जब यह बात है तो ऐ हाजी साहिबो! अपने अन्दर महब्बत पैदा करने की क्या कोशिश की? कुछ भी नहीं साहिबो! हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इत्तिबाअ़ के बग़ैर कुछ नहीं हो सकता, खुद हक़ तआ़ला का इरशाद है आप कह दीजिए या रसूलुल्लाह! अगर तुम्हे खुदा से महब्बत है, तो मेरी इत्तिबाअ़ करो खुदा का तुम से महब्बत हो जाऐगी।

कामिल और कामयाब इंसानः–

कामिल इंसान वही है जो जनाबे रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नक़्शे क़दम पर हो जिसका ज़ाहिर पैग़म्बर के ज़ाहिर के मिस्ल हो और बातिन पैग़म्बर के बातिन के मिस्ल हो, यानी हर अम्र में और हर हाल में पैग़म्बर ही उसके क़िब्ला व काबा हों। उसके ज़ाहिर का क़िब्ला हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़ाहिर हो और उसके बातिन का क़िब्ला हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बातिन हो इसको खूब समझ लीजिए, देखिए तो सही, नमाज़ की सेहत के लिए क़िब्ला रुख़ होना ज़रूरी है हाँ क़िब्ले से थोड़ा फर्क़ हो तो ख़ैर मुज़ाइक़ा नहीं–

ये कैसे मालूम हो कि हमारा हज मक़बूल हुआ या नहीं हज से अख़्लाक़ की तहज़ीब पर भी असर पड़ता है यानी उसके अख़्लाक़ की भी इस्लाह हो जाती है और अगर कोई हाजी उसके ख़िलाफ़ पाया जाऐ तो वह एक आ़रिज़ के सबब से है, वो ये कि उल्माऐ मुहक्क़ीक़ीन ने लिखा है कि जो हजरे असवद में कसौटी की खासियत है यानी उसकी ये खासियत है कि उसके इस्तिलाम के बाद जैसा शख़्स होता है वह अपनी असली ख़िलक़त में ज़ाहिर हो जाता है, असली हालत ज़रूर खुल जाती है–

शायद इस से बाज लोग ये ख्याल करें कि फिर हज न करना चाहिए कि ताकि कलई न खुले इसका जवाब ये है कि हज न करने में इससे ज़ियादा अन्देशा है जैसा कि हदीस में वारिद है जिस शख़्स पर हज फ़र्ज़ हुआ और वह फिर भी न करे तो खुदा को परवाह नहीं ख़्वाह वो यहूदी हो कर मरे या नसरानी हो कर। पस अगर हज न किया तो सूऐ खातमा का अन्देशा ज़ियादा है और हज करने में तो सिर्फ यही अन्देशा है कि कलई खुल जायेगी वह उस वक़्त जब कि उसके आदाब व शराएत का लिहाज़ न किया जाये वरना अकसर यही होता है कि शौक़ और महब्बत के साथ आदाब व शराएत का लिहाज़ करने के साथ जो हज अदा किया जाता है, उसकी दीनदारी में तरक़्की हो जाती है।

हज मक़बूल होने की एक वाज़ेह अ़लामतः-

याद रखिए! हज मक़बूल होने की एक अ़लामत ये भी है कि दोबारा वहां जाने का फिर शौक़ पैदा हो और जो शख़्स वहां से आकर दोबारा जाने से तौबा करले, अन्देशा है कि उसका हज़ मक़बूल न हुआ इसलिए जहां तक हो सके इसकी कोशिश करें कि दोबारा जाने का शौक़ पैदा हो, उसकी यही तदबीर है कि वहां के सवाब और उख़रवी मुनाफेअ़ पर नज़र करे और ये समझ ले कि जन्नत में जो दरजात हज की वजह से नसीब होंगे, उनके सामने ये तकलीफ़ें क्या हैं उन जैसी हज़ार भी तकलीफ़ें हों तो कोई हर्ज़ नहीं–

सफ़रे हज और ज़मानऐ हज की मुसबतों और परेशानियों को बयान करनाः-

एक कोताही जो दूसरों को दीनी नुक़सान पहुंचाने के लिहाज़ से सबसे बुरी और क़बीह है वह ये कि बाज़ लोग हज करके आते हैं और वहां की दुशवारियों और मुसीबतों को इस तरह बताते हैं कि सुनने वाला हज को जाने से डर जाऐ, ऐसे शख़्स के लिए (कि ये लोग अल्लाह के रास्ते से लोगों को रोकते हैं) के मिसदाक़ होने में क्या शुबह है? और अगर वह शिकायात ग़ैर वाक़ई हों जैसे चुनांचे अकसर यूं ही होता है कि बात को बहुत बढ़ा कर कहा जाता है, नीज़ इस मुसीबत की बुन्याद को तो ज़रूरी ही ग़लत साबित किया जाता है जिस की वजह ये होती है कि अकसर वाक़िआत का सबब अपनी हिमाक़त होती है, तो अपनी हिमाक़त कौन बयान करता है, तो इस तौर पर वह शिकायात या उनके बाज़ अजज़ा ग़ैर वाक़ई होते हैं, तो अगर ऐसा हो तो ये लोग (कि ऐब और कजी तलाश करते हैं जो कुफ़्फ़ार की आ़दत थी) के मिसदाक़ होंगे–

हज से वापस आकर ज़मानऐ हज की तकलीफों को बयान करके गुनहगार बननाः-

एक कोताही आज लोग ये करते हैं कि हज से आकर वहां की तकलीफों को बयान करते हैं, ऐसी बातें न करनी चाहिए, चाहे वह वाक़ई कुलफ़तें हों और अगर उन कुलफतों को इज़ाफा करके बयान किया जाये तो ये उससे भी बदतर है वहां की तकलीफ़ें बयान करने का अंजाम ये होता है कि बहुत से लोग हज से रुक जाते हैं उसका सारा वबाल उन लोगों पर होता है जिन्होंने उनको

शेष पृष्ठ .....21...पर..

हिन्दोस्तान में तीन बातों की अशद जरूरत

—हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

—हज़रत मौ0 सै0 अबुल हसन अली हसनी नदवी

इस वक्त हिन्दोस्तान में तीन बातों की अशद जरूरत है और यही ऐसी जरूरत है जिसको अंजाम दे कर हम खुदा और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खुशनूदी हासिल करके काम्याबी व कामरानी से हमकिनार हो सकते हैं:—

1. मुसलमानों में दीनी अहसास व शऊर पैदा करना और खुदा से उनके तअल्लुक को जोड़ना, यही अस्ल बुन्याद है, और यह इस फैसले के साथ किया जाये कि हमको इस्लाम पर मरना और जीना है, हम कोई भी काम करें, तालीमी हो या इक्तिसादी, मुसलमान होने के अहसास और मुसलमान रहने के फैसले के साथ करें।

दौलत आफरीनी के जुनून से कोई जगह खाली नहीं, हर जगह दौलत परस्ती, दौलत आफरीनी और माद्दीयत का जुनून शबाब पर है, इन हालात में ज़रूरी है कि हम मुसलमान हों हममें खुदा से मुसलसल तअल्लुक पैदा करने की तड़प हो, वह तड़प जो हमसे पहले मुसलमानों को दीवानावार फिराया करती थी, अब हममें वह तड़प नहीं, मसलन खाने की लज्जत, खानें में नहीं बल्कि आपमें कूवते जाइक़ा हो, वह इशतिहा जो चाहिए, आगर इशितिहा न हो किसी खाने में कुछ फर्क नहीं, हमारे अन्दर जो चीज़ कम है, वह इशतिहा है, अगर इशतिहा फिर जाग उठे तो हम वैसे ही दीवानावार घूमें।

2. दूसरा मसअला मुसलमानों की तालीम का है, यह बड़ा अहम है, अगर मुसलमानों ने अपनी दीनी तालीम को अपने अन्दर बरकरार न रखा तो मौजूदा निजामे तालीम मुसलमानों को इल्म व हिदायत से महरूम कर देगा, और हमारे हाथों हमारी मुस्लिम नस्ल मफकूद हो जायेगी, मौजूदा निजामे तालीम खालिस ब्रहम्नी और मादिदयाना है, उसको पढ़ कर उन बच्चों का क्या जेहन बनेगा जो मुस्तक्बिल के रहबर बनने वाले हैं? राये आम्मा बहुत बड़ी ताकत है, हमें उसके खिलाफ एहतिजाज करना है, हिन्दोस्तान में इस्लाम को बाकी रखने के लिए इब्तिदाई मकातिब और पराइमरी मकातिब का जाल बिछाना होगा, दीनी तालीमी कौनसिल इस सिलसिले में खास अहमियत रखती है।

3. तीसरा मसअला हमारी फिक्री व जेहनी तरबीयत का है, स्वालेह इन्सानों से राबिता पैदा करके बुजुर्गाने दीन की मुसाहबत से फिक्री व जेहनी तरबीयत हासिल करना जरूरी है, इस तरबीयत के असरात फौरी नहीं होते, मसलन जब ज़मीन में बीज डाला जाता है तो इब्तिदाई मराहिल में उसके कुछ असरात नहीं मिलते, लेकिन बाद में वही एक तनावर दरख़्त की शक्ल इख्तियार कर लेता है।

कठिन शब्दों के अर्थ-

अशद= अत्यन्त, कामरानी= सफलता, इक्तिसादी= आर्थिक, दौलत आफरीनी= धनोपार्जन, माद्दीयत=भौतिकता, शबाब= जवानी, कूवत ज़ाइक़ा= स्वाद शक्ति, इशतिहा=भूख, मफकूद=लुप्त, रहबर=पथ प्रदर्शक, राबिता = सम्पर्क, मुसाहबत=संगत।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्न: वित्र नमाज़ की कितनी रकअ़तें हैं?

उत्तर: वित्र नमाज़ की तीन रकअतें हैं। दो रकअतें पढ़ कर क़अ़दा किया जाता है। और "अत–तहीयात" पढ़ कर खड़े हो जाते हैं। फिर एक रकअ़त पढ़ कर क़अदा करते हैं "अत–तहीयात, और दरूद शरीफ़, दुआ पढ़ कर सलाम फेरते हैं।

प्रश्न: वित्र की नमाज़ में दूसरी नमाज़ों से क्या फ़र्क़ है?

उत्तर: वित्र की तीसरी रकअत में दुआए क़ुनूत पढ़ी जाती है, जिसकी तरकीब यह है कि तीसरी रकअत में सूर–ए–फ़ातिहा और सूरत से फ़ारिग़ हो कर अल्लाहु अकबर कहता हुआ हाथ कानों तक उठाये और फिर हाथ बांध कर दुआए क़ुनूत पढ़े, और अल्लाहु अक्बर कह कर रुकू में जाये और बाक़ी नमाज़ क़ायदे के मुताबिक पूरी करे।

प्रश्न: दुआए क़ुनूत ज़ोर से पढ़नी चाएिह या आहिस्ता?

उत्तर: इमाम हो या मुनफ़रिद सबको दुआए क़ुनूत आहिस्ता पढ़नी चाहिए।

प्रश्न: दुआए क़ुनूत याद न हो तो क्या करे?

उत्तर: कोई भी दुआ जैसे "रब–बना आतिना फ़िद्–दुनिया ह–स–नतव व फ़िल आख़ि–रति ह–स–नतंव व क़िना अज़ाबन्नार" पढ़ लेनी चाहिए।

प्रश्न: अगर मुक़तदी ने पूरी दुआए क़ुनूत नहीं पढ़ी थी कि इमाम ने रुकू कर दिया तो मुक़तदी क्या करे?

उत्तर: दुआए क़ुनूत छोड़ दे और रुकू में चला जाये।

प्रश्न : कितनी नमाज़ें सुन्नते मुअक्कदा हैं?

उत्तर: (1) दो रकअतें फ़ज्र की नमाज़ के फ़र्ज़ों से पहले, (2) चार रकअतें (एक सलाम से) ज़ुहर और ज़ुमे के फ़र्ज़ों से पहले (3) दो रकअतें ज़ुहर की नमाज़ के फ़र्ज़ों के बाद (4) चार रकअतें (एक सलाम से) ज़ुमे की नमाज़ के बाद (5) दो रकअतें मग़रिब के फ़र्ज़ों के बाद, (6) दो रकअतें इशा के फर्ज़ों के बाद सुन्नते मुअक्कदा हैं। (7) रमज़ान शरीफ़ में तरावीह की नमाज़ की बीस रकअतें सुन्नते मुअक्कदा हैं।

प्रश्न: कितनी नमाज़ें सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा हैं?

उत्तर: (1) अस्र की नमाज़ से पहले चार रकअतें (2) इशा की सुन्नत मुअक्कदा के बाद दो रकअतें (3) मग़रिब की सुन्नत मुअक्कदा के बाद छः रकअतें (4) जुमा की सुन्नत मुअक्कदा के बाद दो रकअतें (5) तहैयतुल वुज़ु की दो रकअतें (6) तहैयतुल मस्जिद की दो रकअतें (7) चाश्त की नमाज़ की चार या आठ रकअतें (8) वित्र की नमाज़ के बाद दो रकअतें (9) तहज्जुद की नमाज़ की चार या छः या आठ रकअतें (10) सलातुत–तस्बीह (11) इस्तख़ारे की नमाज़ (12) तौबा की नमाज़ (13) हाजत

की नमाज़ वग़ैरा, ये सब नमाज़ें सुन्नत ग़ैर मुअक्कदा हैं जो नफ्ल के हुक्म में हैं।

प्रश्नः सुन्नतें घर में पढ़ना अच्छा है या मस्जिद में?

उत्तरः सब सुन्नतें और नफ़िल नमाज़ें घर में पढ़ना ज़ियादा अच्छा है, सिवाय कुछ सुन्नतों और नफ़्लों के, कि इनको मस्जिद में पढ़ना ज़ियादा अच्छा है, जैसे तरावीह की नमाज़, तहैयतुल मस्जिद, सूरज ग्रहण की नमाज़ वगैरह।

प्रश्नः नफिल नमाज़ किस किस वक़्त पढ़ना मकरूह है?

उत्तरः (1) सुबह सादिक़ होने के बाद फ़ज्र की दो रकअत सुन्नतों के अलावा फ़र्ज़ों से पहले (2) फ़ज्र के फ़र्ज़ों के बाद सूरज निकलने से पहले नफ़िल नमाज़ मकरूह है (3) अस्र के फ़र्ज़ों के बाद सूरज का रंग फीका पड़ने से पहले पहले नफ़िल नमाज़ मकरूह है, लेकिन इन तीनों वक़्तों में फ़र्ज़ नमाज़ की क़ज़ा और वाजिब नमाज़ की क़ज़ा और जनाज़े की नमाज़ और तिलावत का सज्दा बिला कराहत जाइज़ है (4) सूरज निकलना शुरु होने से एक नेज़ा ऊँचा होने तक (5) ठीक दोपहर के वक़्त (6) सूरज का रंग फीका हो जाने से छुप जाने तक हर नमाज़ मकरूह है। हां अगर उसी दिन की अस्र की नमाज़ न पढ़ी हो तो उसे सूरज मुतग़ैयर होने और छुपने की हालत में भी पढ़ लेना जाइज़ है।

इसी तरह खुत्बे के वक़्त सुन्नत और नफ़िल नमाज़ मकरूह है।

प्रश्नः सूरज मुतग़ैयर होने से क्या मतलब है?

उत्तरः जब सूरज लाल टिकिया की तरह हो जाये और उस पर नज़र ठहरने लगे तो समझो कि सूरज मुतग़ैयर हो गया।

❖❖❖

हज के बाद ज़िन्दगी.....

डराया है। ये तो ज़ाहिर है वहां पर ऐसी तकलीफ़ें नहीं हैं जिनका यकीनी असर हलाकत हो बल्कि जैसी तकलीफ़ें यहां के सफर में पेश आती हैं वैसे ही वहां पेश आती हैं, अगर आदमी ऐहतियात से काम ले और काफिले से अलाहेदा न हो तो ज़रा भी अन्देशा नहीं, और यूं खुद ही कोई अपनी बे एहतियाती से हलाक होना चाहे तो उसका यहां भी कोई इन्तिज़ाम नहीं हो सकता।

मस्लिहतन वहां की तकलीफ़ें बयान करना-

अलबत्ता अगर कोई आक़िल हकीम शख़्स वहां की तकलीफ़ों का तज़किरा हिकमत से करे उसको इज़ाजत है क्योंकि उसके बयान से लोग हज से नहीं रुकेंगें इसका बयान करना इस ग़रज़ से होगा कि उन तकालीफ़ का इस तरह इन्तिज़ाम करना चाहिए।

कठिन शब्दों के अर्थ-

महजूब = लज्जित, नादिम= लज्जित, तुहफा= उपहार, मोजिबे तअस्सुफ= खेद योग्य, आमाले स्वालिहा= भले काम, अमाले सय्यिआ= बुरेकाम, मुहतम बिश्शान= महत्वशाली, मुजाइका= हानि, चिन्ता, सूए खातिमा = बुरा अन्त, कुल्फतें= कष्ट।

❖❖❖

लामहदूद क़ायनात और इंसान की महदूद अक़्ल

(असीमित ब्रह्माण्ड और सीमित मानव बुद्धि)

—इं0 जावेद इक़बाल

अगरचे बात पुरानी है मगर दिन प्रतिदिन होने वाली नई नई खोजों के कारण कोई न कोई नया पहलू भी सामने आ ही जाता है। बात पुरानी ज़रूर है मगर संजीदगी से बार बार ग़ौर व फ़िक्र (चिन्तन) की दावत (निमंत्रण) देती है। Swift Tuttle नाम का Comet (दुमदार तारा) जो बहुत ताक़तवर दूरबीनों के ज़रिये न्यू कैलीडोनिया में अक्टूबर 1992 में देखा गया और अनुमान लगाया गया कि सन् 2126 ई0 में वह एक बार फिर ज़मीन के बहुत पास से गुज़रेगा उस वक़्त यह ज़मीन से टकरा भी सकता है। जिसके नतीजे में ज़मीन की गर्दिश उलटी दिशा में हो सकती है उस वक़्त सूरज पूर्व के बजाय पश्चिम से निकलता दिखाई देखा। जो कि क़ियामत की निशानियों में से एक निशानी है।

यह तो थी एक कोमेट की बात मगर ऐसे कई कोमेट (दुमदार सितारे) ताक़तवर दूरबीनों से देखे जा चुके हैं जो सूरज से बहुत ज़ियादा दूरी पर घूमते रहते हैं। कभी कभी 100—50 वर्षों में कोई Comet ज़मीन के क़रीब से भी गुजरता है और वैज्ञानिकों को बड़ी ताकतवर दूरबीनों से नज़र आ जाता है।

वैज्ञानिकों ने बड़ी बड़ी ताक़तवर दूरबीनों की मदद से पता लगाया है कि क़ायनात में अनगिनत कहकशायें (Galaxies- आकाश गंगायें) फैली हुई हैं। उन का अनुमान है कि लगभग एक अरब कहकशायें इस कायनात में तैर रही हैं। इनमें से दूर एक कहकशाँ एक खरब सितारों को अपने अन्दर समेटे हुए है। हमारी आँख को दिखाई देने वाला एक सितारा क्या है, कभी हमने सोचा? हम जिसको एक नन्हा सा तारा समझते हैं, हो सकता है कि वह हक़ीक़त में हमारे सूर्य से भी कई गुना बड़ा हो, और यह भी मुमकिन है कि वह सिर्फ़ एक तारा न हो बल्कि कोई कहकशाँ हो जिसमें खरबों सितारे (सय्यारे) उसी तरह तैर रहे हों जैसे हमारी अपनी कहकशाँ में सूर्य अपने सभी सय्यारों के साथ किसी लामहदूद सफ़र पर दौड़ रहा है। इन सय्यारों और कहकशाओं की दूरी हमारी ज़मीन से इतनी ज़ियादा है कि उन्हें मील या किलोमीटर में नहीं नापा जा सकता। इन दूरियों को नापने के लिए एक अलग ही पैमाना ईजाद किया गया है जिसे नूरी साल (Light Year) कहते हैं। नूरी साल का मतलब यह है कि वह दूरी जो रोशनी की किरन एक साल में तै करती है। अब आइये देखें कि रोशनी की रफ़्तार क्या है?

रोशनी की किरणें एक सैकंड में एक लाख छयासी हज़ार मील अर्थात तीन लाख किलोमीटर की दूरी तय करती हैं। अब हिसाब लगायें कि साल में रोशनी का सफ़र कितने किलो

मीटर होगा। हमारा यहां हिसाब का सवाल हल करना मक़सद नहीं है इसलिए बताते चलें कि एक साल में रोशनी की किरन नौहज़ार चार सौ तिरसठ अरब किलो मीटर का सफर तैय करती है। इतनी बड़ी गिनती को हिन्दसों (अंकों) में लिखना सरल नहीं है इसलिए इसे लिखने के लिए शार्ट कट तरीक़ा निकाला गया है, इस तरीक़े पर 9663X9 लिखा जायेगा।

सूरज की दूरी हमारी ज़मीन से 15 करोड़ किलो मीटर आंकी गई है जिसे रोशनी की किरनें 8.3 सेकंड में तैय कर लेती हैं। यह सूरज जिस कहकशां (Galaxy) में है, वह एक दरमियानी साइज़ की कहकशां है, इसकी लम्बाई एक लाख नूरी साल और चौड़ाई दस हजार नूरी साल है अर्थात यह एक अण्डे की तरह है जिसमें लगभग एक खरब सय्यारे हैं। और करोड़ों सय्यारे हमारे सूरज से भी बड़े हैं। यह सब सय्यारे अपने अपने दायरे में तैर रहे हैं, न कोई किसी से टकराता है और न कोई अपने तैय शुदा दायरे से हटता है। क़ुरआन पाक में इसी तरफ़ इशारा है, फरमाया उसने सूरज और चाँद को बनाया, हर एक बीच फ़लक के तैर रहा है। (21:33) और सब अपने अपने तैय शुदा निर्धारित रास्तों पर चल रहे हैं (13:2, 14:33)।

कुछ समय पूर्व तक हमारे सूरज के चारों ओर चक्कर लगाने वाले नौ सौ सय्यारों का इल्म वैज्ञानिकों को हो सका था मगर अब अन्य दो चार सय्यारों का इल्म भी वैज्ञानिकों को हुआ है। वह नए देखे गए सय्यारे सूरज से इस क़दर दूरी पर हैं कि इन्हें सूरज का एक चक्कर लगाने में 84 वर्ष से 165 वर्ष तक लगते हैं। जब कि हमारी ज़मीन सूरज का एक चक्कर केवल 365 दिन में लगाती है इसी को एक वर्ष माना गया है। इन सय्यारों के चारों ओर चक्कर काटने वाले कुछ और छोटे सय्यारे भी हैं जिन्हें हम चाँद कहते हैं। हमारी ज़मीन का एक ही चाँद है जो लगभग साढ़े उन्तीस (29.5) दिन में ज़मीन का एक चक्कर पूरा करता है इसी वक़्फ़े को एक महीना माना गया है। इस तरह ज़मीन की गर्दिश सूरज के चारों ओर और चाँद की गर्दिश ज़मीन के चारों ओर, साल और महीने का हिसाब रखने के काम आती है।

जैसा कि सूरः यूनुस की आयत नं0 5 में फरमाया गया है कि अल्लाह ने सूरज और चाँद की मंज़िलें मुक़र्रर (निर्धारित) कर दी हैं ताकि तुम वर्षों की गिनती और हिसाब कर सको, अल्लाह ने ये चीज़ें बेकार में (खिलवाड़ के लिए) नहीं बनाई हैं।"

चाँद की दूरी ज़मीन से लगभग तीन लाख चौरासी हज़ार कि0मीटर है सूरज की किरणें चांद से टकराकर (Reflect) ज़मीन की तरफ़ लौटती हैं तो चाँद हमें चमकता हुआ दिखाई देता है और चाँदनी में हमें ठंडक का एहसास होता है।

चाँद और सूरज की ज़मीन से दूरी को समझने के लिए तसव्वुर (कल्पना) करो कि एक रेल गाड़ी 100 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ़्तार से चले तो वह चाँद

पर साढ़े पाँच महीने में पहुंचेगी और सूरज पर एक सौ सत्तर साल में पहुंचेगी।

इस तरह कायनात की हर चीज़ पर ग़ौर फ़िक्र (चिन्तन) करने पर स्पष्ट होता है कि अल्लाह तआला ने ज़मीन और आसमान के बीच जो कुछ भी बनाया है वह इंसान की ख़िदमत के लिए ही बनाया है, इन सब में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो सोच–विचार करते हैं। (कुरआन 45:13)

वर्तमान काल में हम कह सकते हैं कि अल्लाह ने कुरआन में किया हुआ अपना वादा अपने बन्दों के सामने स्पष्ट रूप से पूरा कर दिया है। फरमाया गया है "शीघ्र ही हम इनको अपनी निशानियां आफ़ाक़ (आन्तरिक्ष) में भी दिखायेंगे और इनकी अपनी जानों के अन्दर भी, यहां तक कि इन पर यह स्पष्ट हो जायेगा कि वास्तव में यह (कुरआन के आदेश) सत्य हैं। सूरः हामीम सजदा आयत 53 41:53)।

सूरज के चारों ओर चक्कर लगाने वाले कुछ मुख्य सय्यारों (ग्रहों) के नाम और उनकी सूरज से दूरियां दर्ज ज़ेल (निम्नलिखित) हैं–

हिन्दी	इंगलिश	उर्दू	सूरज से दूरी (कि0मी0 में)
मंगल ग्रह	*Mars*	मिर्रीख़	लगभग 23 करोड़
बुद्ध	*Mercury*	अतारू	लगभग 06 करोड़
बृहस्पति	*Jupitor*	मुश्तरी	लगभग 78 करोड़
शुक्र	*Venus*	ज़हरा	लगभग 11 करोड़
शनि	*Saturn*	ज़ुहल	लगभग 143 करोड़
धरती	*Earth*	ज़मीन	लगभग 15 करोड़

यह सभी सय्यारे सूरज के चारों ओर अपने अपने दायरे में चक्कर लगा रहे हैं और खुद भी इन सब को साथ लेकर अपनी कहकशां में किसी ना मालूम मंज़िल की ओर भागा चला जा रहा है उसकी मंज़िल का इल्म (ज्ञान) कायनात के बनाने वाले खुदा को ही है। जिस कहकशां में हमारा सूरज भाग रहा है उसकी लम्बाई एक लाख नूरी साल और चौड़ाई दस हज़ार नूरी साल पहले ही बताई जा चुकी है। यह भी बतलाया जा चुका है कि एक नूरी साल $9643X10^{19}$ किलोमीटर को कहते हैं। इस तरह कहकशां की लम्बाई $9463X10^{9}X10^{5}$ यानी $9463X10^{14}$ और चौड़ाई $9463X10^{9}X10^{4}$ यानी 9463X1013 किलो मीटर हुई। इन दूरियों का इंसानी अक़्ल में समाना महाल (कठिन) है। क्या इन निशानियों को देख लेने के बाद भी खुदा के होने न होने में और उसकी लामहदूद (असीमित) कुदरत में कोई शक शुबः बाक़ी रह सकता है? गमर हठधर्मियों के लिए सब व्यर्थ है। ◆◇◆

विधाता तथा नास्तिक

नास्तिक का पहुँच पाना
विधाता तक असम्भव है
मन उसका ऐसा विकृत है
सुधार उसका असम्भव है
समस्त संसार करता है
नमन हर पल विधाता को
दृश्य यह भी नज़र आना
नास्तिक को असम्भव है
मिटाये अपने मंथन को
मिटाये अपने चिन्तन को
करे चिन्तन विधाता में
पहुँच बस यूँ तो सम्भव है

उर्दू सीखें

—अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी नसीराबादी

उर्दू पढ़ना लिखना सीखें।
मीठे बोल बोलना सीखें।।
ये प्यारी ज़बान है मेरी
इसको पढ़ना लिखना सीखें।।
नस्र पढ़ें हम नज्म पढ़ें हम।
नस्र नज्म को लिखना सीखें।।
हिन्द की प्यारी उर्दू बोली।
उर्दू बोल बोलना सीखें।।
हिन्दी ज़बान के लफ्ज़ हैं इसमें।
उर्दू में उनको पढ़ना सीखें।।
यह ज़बान है मेल सिखाती।
सबसे मिल-जुल रहना सीखें।।
हिन्दू सीखें, मुस्लिम सीखें।
सिख, इसाई उर्दू सीखें।।
लड़की-लड़के उर्दू सीखें।
सिद्दीक़ी भी उर्दू सीखें।।

—नारी—

इस्लाम ने नारी के प्रति पूर्ण संतुलित एवं स्वाभाविक दृष्टिकोण अपनाया। उसके कलंकों को धोया, उसे सम्मानजनक स्थान पर आसीन किया, उसकी इज़्ज़त आबरू की रक्षा की उसे आर्थिक अधिकार प्रदान किए। उसके घर को उसकी वास्तविक कर्मस्थली बता कर उसे बाहरी जगत के दबाव, तनाव और पीड़ाजनक भागदौड़ से मुक्ति दिलायी ताकि वह एकाग्र मन से नई नस्ल को संवार सके।

समान अधिकार देते हुए पारिवारिक प्रबंध व्यवस्था के लिए पुरुष को घर के मुखिया के नाते मात्र एक श्रेणी की उच्चता दी है। पुरुष को स्त्री का स्वामी और स्त्री को दासी नही बनाया।

लोक तंत्र दिवस

लोक तंत्र दिन आज है प्रजा तंत्र दिन आज है
संविधान है बना हमारा शुभ पर्व दिन आज है
हक़ है यां सब का बराबर कह रहा है संविधान
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सब का है यह हिन्दोस्तान
धर्म पर अपने चलें यहाँ सब भाषा अपनी सभी पढ़ें
राष्ट्र भाषा होगी हिन्दी सब यहाँ हिन्दी पढ़ें
राष्ट्र ध्वज है यह तिरंगा सब इसे लहराएंगे
हिन्द के सब रहने वाले हिन्दी सब कहलाएंगे
दूर होगा छूत छात और दूर होगी ऊँच नीच
कर्म में जो नीच होगा उसको ही समझेंगे नीच
रहेगा अनपढ़ यहां न कोई हुनर यहां सब सीखेंगे
रहेगा भूखा यहां न कोई चैन से अब सब सोएंगे

भाई से भाई लड़ें कैसी बुरी यह बात है
मानव से दानव बनें कैसी बुरी यह बात है
पशु पक्षी को सुख पहुंचाना मानवी कर्तव्य है
पशु से ऊँचा रहे यह मानव, मानवी कर्तव्य है
मानव का सम्मान होगा मानवी आधार पर
भाई बन कर सब रहेंगे मानवी आधार पर
देश की रक्षा सुरक्षा हम सभी का फ़र्ज़ है
देश में अम्नो अमाँ हो यह हमारा फ़र्ज़ है
उच्च नैतिकता का होगा अब तो भारत में रवाज
सूफ़ियों की बात होगी और संतों का समाज
लोक तंत्र का यह दिवस हर जनवरी में आएगा
तिथि जब २६ की होगी राष्ट्र ध्वज फहराएगा

❖❖❖

ग़रीब किसान और बनिया —इदारा

एक ग़रीब किसान था, उसके पास केवल एक ऐकड़ ज़मीन थी, एक ऐकड़ अर्थात 32 बिस्वे अर्थात कच्चे चार बीघे। अब पुरानी बातें कोई क्या जानेगा, कच्ची, पक्की नाप तौल को कोई क्या समझेगा, अंग्रेजी नाम को पक्की नाप कहा जाता था, देसी नाप को कच्ची नाप कहते थे, यह कच्ची नापें विभिन्न प्रान्तों में विभिन्न थीं। हमारे इलाक़े में कच्ची पक्की नाप तौल में ढाई गुना का अंतर था, अफसोस अब तो लोग ढाई भी नहीं जानते, ढाई का अर्थ है दो और आधा, ज़मीन की नाप में बीघा, बिस्वा बिस्वांसी चलती थी सवा आठ फुट का एक लट्ठा होता था, पता नहीं सवा आठ समझे या नहीं (आठ फुट 3 इंच) एक लट्ठा लम्बा और एक लट्ठा चौड़ा ज़मीन का भाग एक बिस्वांसी कहलाता, इसी प्रकार की बीस बिस्वांसी ज़मीन का टुकड़ा बिस्वा कहलाता, और बीस बिस्वा एक बीघा कहलाता, यह एक बीघा हमारे इलाके में ढाई बीघा होता, इस प्रकार एक ऐकड़ अर्थात 32 बिस्वा कच्चा चार बीघा कहलाता था, जबसे अशरी पैमाने आए हैं लोग पुराने पैमाने भूल गये, पहले रत्ती, माशा, तोला, छटांक, सेर और मन। पाई, आना, रूपया। इंच, फिट, गज़, बिस्वांसी, बिस्वा, बीघा के सरल प्रश्न कक्षा चार में पढ़ाये जाते थे जिनको अब हाई स्कूल के विद्यार्थी भी नहीं लगा सकते। दशमिक माप (अशरी पैमाने) ने सब भुला दिया, अरे हम तो बड़ी दूर जा पड़े।

ग़रीब किसान के पास एक ऐकड़ ज़मीन थी दो छोटी ज़ात के बैल थे सीमित परिवार में पत्नी, आठ वर्ष का बेटा, पाँच वर्ष की बेटी थी किसान खेत में खूब मेहनत करता, मजदूर से मदद नहीं ले सकता था इसलिए कि मज़दूरी नहीं दे सकता था। उसकी पत्नी उसको सहयोग देती, किसान खेत जोत कर आता, पत्नी खाना बना कर तैयार रखती, बैलों का चारा भी तैयार रखती, किसान दोपहर में आता खाना खाता, बच्चों से बातें करता, पत्नी बैलों को चारा पानी देती, दोपहर बाद किसान फिर खेत पर चला जाता और शाम को आता, उसकी पत्नी कभी कभी खेतों में अपने पति की मदद करती, दोनों बच्चे भी खेत जाते और खेत साफ करने में मदद देते, पत्नी दोनों वकत बैलों को चारा पानी देती और कुछ समय निकाल कर दोनों बच्चों को लिखना पढ़ना भी सिखाती, इस प्रकार घर का काम प्रतिबन्ध से चल रहा था।

खेत में अच्छा ग़ल्ला पैदा होता जो उस परिवार के लिए परियाप्त होता, कुछ चावल और कुछ सरसों बच जाती जिसे बेच कर किसान घर के कपड़े बनाता, और घर के दूसरे कामों में लाता। और ज़मीन का लगान अदा करता।

किसान ने कुछ पैसे बचा कर एक देसी भैंस खरीदी, देसी भैंस इसलिए खरीदी की मुर्रा भैंस खरीदने के पैसे उसके पास न थे। अब पत्नी का काम थोड़ा बढ़ गया था, अब से बैलों के साथ भैंस को भी खिलाना पिलाना और दूध दूहना था, इसलिए कि भैंस दूध वाली थी, उसके साथ एक पड़वा भी था।

बच्चे बहुत खुश थे इसलिए कि उनको कुछ दूध और स्वादिष्ट मट्ठा मिल रहा था।

पत्नी ने जल्द ही कुछ घी जमा कर लिया और पति से कहा इसे बेच लाओ और पैसे बचाये जायें जब कुछ पैसे एकत्र हो जाएं तो मुन्नी के लिए पायल लेना है।

किसान घी ले कर बाज़ार गया और जिस बनिए के यहां से हल्दी, मिर्चा, धनिया, शकर, चाय आदि लाता था उसी के यहां घी बेच दिया। बनिये ने घी तौला एक सेर से कुछ अधिक था। बनिये ने एक सेर के दाम चुका दिये। किसान बनिये के यहां से मसालों के साथ एक सेर शकर भी ली और घर आ गया।

शकर सुरक्षित कर ली और गुड़ से काम चलाता रहा, दोबारा जब घी तैयार हुआ तो उसने सोचा घी तौल कर ले जाये और सेर भर से अधिक न हो वरना बनिया अधिक के दाम न देगा, मगर किसान के यहां दीहाती तराजू तो थी मगर बाँट न थे उसने तराजू के एक पलड़े में एक सेर शकर (जो बनिये के यहां से लाया था) रखी दूसरी ओर घी, बरतन का धरा कर लिया था, घी ज़रा झुकता रखा, और घी लेकर बनिये के पास पहुंच गया यद्यपि एक सेर शकर उसके घर रखी थी फिर भी उसने किसी ज़रूरत से एक सेर शकर ली और दूसरा सामान लिया और बनिये को घी पेश किया, बनिये ने घी तौला तो एक सेर से एक छटांक कम था यानी 15 छटांक था। किसान ने कहा मैं घी तौल कर लाया हूं कौन सा सेर है? इस प्रकार तूतू मैं मैं होनी लगी, आते जाते लोग एकत्र हो गये, बनिये ने लोगों से कहा भाईयो इसमें धोखे की क्या बात है घी 15 छटांक है देख लो, लोग भी बनिये की ओर से बोलने लगे, किसान कुछ परेशान हुआ फिर उसकी बुद्धि तीव्र हो गई उसने एक सेर शकर जो उसने अभी बनिये से ली थी बांट हटा कर शकर रख दी अब घी की ओर पलड़ा झुका हुआ था। बनिया बड़ा शर्मिन्दा हुआ अब वह चुप था।

किसान ने कहा आप लोग कुछ समझे? एक साहब बोले, बात साफ़ है बनिये ने शकर कम तौली, किसान ने कहा यही नहीं कि इस बनिये ने यही शकर कम तौली बल्कि कम तौलने की इसकी आदत है। मैं आप लोगों को बताता हूं कि पिछली बार मैं घी लाया इन्होंने तौला वह एक सेर से ज़ियादा था कितना ज़ियादा था मालूम नहीं, इन्होंने सेर पर कोई बांट नहीं रखा और कह दिया एक सेरे से ज़रा

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का वर्णन पवित्र कुर्आन में

—इदारा

हज़रत ईसा अलै0 का उल्लेख पवित्र कुर्आन में बहुत जगह आया है। यहां केवल सूरतुन्निसा आयत नं0 171—173 का अनुवाद प्रस्तुत है—

ऐ किताब वालो! अपने धर्म में हद से आगे न बढ़ो और अल्लाह से जोड़ कर सत्य के अतिरिक्त कोई बात न कहो। मरयम का बेटा मसीह—ईसा इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कि अल्लाह का रसूल है और उसका एक "कलिमा" है, जिसे उसने मरयम की ओर भेजा था। और उसकी ओर से एक रूह है। तो तुम अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और "तीन" न कहो, बाज आ जाओ! यह उसकी महानता के प्रतिकूल है कि उसका कोई बेटा हो। आकाशों और धरती में जो कुछ है, उसी का है और अल्लाह कार्य साधक की हैसियत से काफी है।

मसीह ने कदापि अपने लिए बुरा नहीं समझा कि वह अल्लाह का बन्दा हो और न निकटवर्ती फ़रिश्तों ने ही इसे बुरा समझा। और जो कोई अल्लाह की बन्दगी को अपने लिए बुरा समझेगा और घमण्ड करेगा, तो वह (अल्लाह) उन सभी लोगों को अपने पास इकट्ठा करके रहेगा।

अतः जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, तो अल्लाह उन्हें उनका पूरा—पूरा बदला देगा और अपने उदार अनुग्रह से उन्हें और अधिक प्रदान करेगा। और जिन लोगों ने बन्दगी को बुरा समझा और घमण्ड किया, तो उन्हें वह दुखद यातना देगा। और वे अल्लाह से बच सकने के लिए न अपना कोई निकट का समर्थक पाएंगे और न ही कोई सहायक।

❖❖❖

झुकता है, मैंने सोचा घर से घी तौल कर एक सेर लाऊँ, ज़ियादा न लाऊँ, मेरे घर बांट न थे मैं इन्हीं की दी हुई एक सेर शकर से घी तौल कर ले आया, वह शकर एक ओर रखी और घी दूसरी ओर और जरा झुकता रखा, अब जो व घी 15 छटांक निकला तो मेरी समझ में आया कि यह बनिया अपना माल कम तौलकर बेचता है और दूसरे का माल जियादा तौल कर लेता है, सुबूत आप लोगों के सामने है। सब लोग बनिया को बुरा भला कहने लगे, बनिया कुछ बोल नहीं रहा था बस लोगों की ओर हाथ जोड़ कर दिखा रहा था, फिर वह बोला अब मैं कसम खाता हूं कि कम न तौलूँगा, न दूसरे का माल ज़ियादा तौल कर लूँगा, लोग बनिये को बुरा भला कहते हुए चले गये, और किसान 15 छटाँक घी का हिसाब ले कर घर चला गया।

दो तीन दिन बाद एक सज्जन झोले में स्प्रिंग वाली तराजू डाल कर बनिये के पास पहुंचे और दो सेर शकर ली, फिर बनिये के सामने ही स्प्रिंग वाली तराजू निकाल कर शकर तौली तो तौल ठीक थी, बनिया बोला जब मैंने कसम खा ली है तो अब कम नहीं तौल सकता। इस प्रकार गरीब किसान द्वारा बनिये की इस्लाह हो गई।

पवित्र कुर्आन में है—
अनुवादः बड़ी खराबी है नाप तौल में कमी करने वालों के लिए कि वह जब दूसरों से नाप कर लें तो पूरा लें और जब वह उन्हें नाप कर या तौल कर दें तो घटा कर दें। (83:1—3)

❖❖❖

इंसानी ग़िज़ा (मानव आहार)

—इं0 जावेद इक़बाल

हमारे मुल्क़ में इंसानी ग़िज़ा के बारे में व्यर्थ का मतभेद खड़ा कर दिया गया है। शाकाहारी और मांसाहारी आहार को लेकर समाज को दो भागों में बांटना और आपसी नफ़रत व मनमुटाव की भावनाओं को बढ़ावा देना, दरअसल कुछ राष्ट्रीय संस्थाओं का मूल मक़सद है। हालांकि यह भी एक हक़ीक़त है कि नफ़रत की भावनाओं को बढ़ावा देने वाली इन संस्थाओं के अधिकांश सदस्य स्वयं भी मांसाहार करते हैं और कुछ तो बड़े बड़े सलाटर हाउसेज़ के मालिक हैं जहां से गौवंशी पशुओं का मांस दूसरे देशों को निर्यात होता है। भारत इस समय गोश्त निर्यात करने वाला दुन्या का दूसरे नम्बर का सबसे बड़ा देश बन चुका है।

हिन्दू भाइयों के द्वारा बड़े पैमाने पर मांसाहार करने का खुला प्रमाण यह है कि अब हमारे देश में चिकन और मटन की दुकानें शुक्रवार को बन्द नहीं होती, वे मांगलवार को बंद होती हैं क्योंकि मंगल को हिन्दुओं के गोश्त न खाने की वजह से बिक्री नहीं होती। फिर नवरात्रि के अवसर पर नौ दिन तक अधिकांश दुकानें बन्द रहती हैं और गोश्त मिलना मुश्किल हो जाता है।

वास्तव में यह विवाद राजनीति से प्रेरित है। इतिहास के पन्ने पलटने पर पता चलता है कि उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में और बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में उत्तर प्रदेश और बिहार के इलाक़े में कट्टरपंथी हिन्दुओं के द्वारा "गौ रक्षणी सभा" बनाई गई थी जिसने गाय के ज़बीहे के मुद्दे को लेकर दंगे भड़काये। गाँधी जी ने अपने प्रभाव का प्रयोग करके उस समय एक समझौता कराया था, जिसमें यह तैय पाया था कि मुसलमान ईद के मौक़े पर गाय नहीं काटेंगे और हिन्दू मस्जिदों के सामने बैण्ड नहीं बजायेंगे। *(Refrence: Rallying Around the Cow, Publishied in Subaltern Studios, Vol. II)* इस तरह बीसवीं शताब्दी में यह मुद्दा कुछ वर्ष के लिए ढंडा पड़ गया।

मुल्क़ के बंटवारे के बाद वर्ष 1952 ई0 में पहले आम चुनाव में जब जन संघ पार्टी केवल 3 सीटें ही जीतने में सफल हो सकी तब आर0एस0एस0 के सरसंघ चालक, माधव सदा शिव गोलवालकर ने हिन्दुओं को किसी एक मुद्दे पर एकत्र करने के लिए विचार विमर्श किया और भारत माता के गौरव का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि कुर्बानी का केन्द्र बिन्दु गौ रक्षा के अतिरिक्त कोई और नहीं हो सकता। लिहाज़ा गाय के ज़बीहा पर पूर्ण पाबन्दी लगाना हमारा पहला मक़सद होना चाहिए हक़ीक़त यह है कि आदि काल में जैन और

बौद्ध धर्म से पूर्व भारत में आम तौर से मांसाहार किया जाता था। ब्रह्मण वर्ग तो मांसाहार को विशेष महत्व देता था। तरह तरह के यज्ञों का आयोजन किया जाता था जिनमें घोड़े, बैल, गाय, भैंस आदि की बलि चढ़ाई जाती थी। वैदिक धर्म ग्रंथों में मांसाहार की प्रशंसा की गई है और पशु को काटने पकाने और परोसने तक की विधियाँ बताई गई हैं। कुछ नमूने पाठकों की ज्ञान वृद्धि के लिए हम यहां दे रहे हैं–

1. ऋग वेद मण्डल 1 सूक्ष्म 162 मंत्र 13 का भावार्थ इस तरह है– जो मट्टी की हांडी में पकाये गए अन्न युक्त मांस का निरीक्षण करते हैं, जो पात्रों को जल से पवित्र करते हैं, ऊषमा को ढक्कन द्वारा रोकने वाले और छुरी के द्वारा टुकड़े करने वाले जो उपकरण हैं वे सब इस घोड़े के मांस को विभूषित (स्वादिष्ट) करते हैं।

2. ऋग वेद मण्डल 6 सूक्ष्म 16 मंत्र 47 का भावार्थ इस तरह है– हे अग्नि देव, हम सब मंत्रों का पाठ करते हुए सच्चे मन से आप की सेवा में यह हव्रि (कुर्बानी) प्रदान करते हैं, गाय और बैल की यह हवि (कुर्बानी) आपको स्वीकार हो''

हिन्दू धर्म में शरीअत की किताब का दर्जा रखने वाली मनुस्मृति के पांचवे अध्याय में तो मांस खाने खिलाने पकाने परोसने इत्यादि की विधियां बड़े विस्तार से बयान की गई हैं। यहां हम केवल तीन मंत्रों का भावार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं।

मंत्र नं0 5:27:–

ब्राह्मण को मांस खिलाने की कामना करने वाले को चाहिए कि मांस को पानी से धो कर पकाए और तब स्वच्छ मांस ब्रह्मण के सामने परोसे और स्वयं भी खाए, प्राण रक्षा के लिए विधि विधान से (प्राप्त) मांस खाना चाहिए।

मंत्र नं0 5:35:–

शास्त्रानुसार नियुक्त (शरीअ़त के मुताबिक़ ज़िबह किए गए) मांस को जो मनुष्य नहीं खाता वह मर कर 21 जन्म तक उसी पशु योनि में जन्म लेता है।

मंत्र नं0 5:36:–

ब्राह्मण को मंत्रों द्वारा वध (ज़ब्ह) किए बिना पशुओं का मांस हरगिज़ नहीं खाना चाहिए। मंत्रों को पढ़ कर शाश्वत विधि से ज़ब्ह करके ही मांस खाना चाहिए''।

वैदिक ग्रंथों के अध्ययन से यह हक़ीक़त स्पष्ट हो जाती है कि वैदिक काल में ऋषियों मुनियों, ब्राह्मणों का विशेष भोजन मांसाहार ही था। वर्तमान में इस का विरोध करना केवल राजनैतिक मुद्दा है। अभी कुछ दिन पूर्व आर0जे0डी0 पार्टी के अध्यक्ष श्री रघुवंश प्रसाद ने भी कहा है कि वैदिक काल में ऋषि मुनि मांसाहार करते थे। हिन्दू धर्म के महान प्रचारक स्वामी विवेकानन्द ने अपनी एक पुस्तक में लिखा है कि प्राचीन हिन्दू संस्कृति के अनुसार कोई मनुष्य अच्छा हिन्दू नहीं हो सकता, जब तक वह गौ मांस न खाए''।

(The Comlete work of Swami Vivekanand Vol.3).

सृष्टि के रचियता (ख़ालिक़े कायनात) ने दुन्या की हर चीज़ को इंसान के उपयोग और उसकी सेवा के लिए बनाया है। उस मालिक ने इंसानों को खाने पीने के लिए शाक भाजी फल, फलारी और दुधारू पशु इत्यादि जैसी अनेक चीज़ें धरती पर पैदा की हैं बूढ़ा और नाकारा होने पर इन दुधारू पशुओं का गोश्त खाने की इजाज़त भी उसी ख़ुदा की दी हुई है। साथ ही उस मालिक ने प्रत्येक जीव के लिए खाने पीने की चीज़ों का निर्धारण भी कर दिया और उसी के अनुसार प्रत्येक जीव के शरीर की रचना उसने बनाई है। शाकाहारी पशु जैसे गाय, भैंस बकरी आदि कभी मांसाहार नहीं करते और मांसाहारी पशु जैसे कुत्ता बिल्ली शेर कभी शाकाहार करके भूख नहीं मिटाते। परन्तु खुदाए पाक ने इंसानों को जीवन के अन्य कर्मों की भांति खान पान के क्षेत्र में भी दोनों प्रकार का भोजन करने की आज़ादी दी है और उसी के अनुसार इंसान के दाँतों–दाढ़ों की रचना और पाचन शक्ति प्रदान की है। इंसान जैसा भी चाहे आहार ले सकता है, न उसे चबाने में कठिनाई होगी और न पचाने में, जब कि अन्य जीवों में ऐसी क्षमता नहीं है।

इतना ही नहीं, सृष्टा–खुदा ने उपयोगिता के आधार पर ही धरती पर प्रत्येक चीज़ की व्यवस्था की है। जिस चीज़ की ज़रूरत ज़ियादा है वह ज़ियादा मात्रा में उपलब्ध है और कम ज़रूरत वाली चीज़ कम मात्रा में है। हवा और पानी की ज़रूरत इंसानों को सबसे ज़ियादा है तो खुदाए पाक ने इन दो चीज़ों के असीमित भण्डार बना दिये। प्रकृति का यह नियम इंसानों के अपने कर्मो के आधार पर बदलता भी रहता है। जब इंसान किसी चीज़ का प्रयोग करना छोड़ देता है तो वह चीज़ भी धीरे धीरे लुप्त होने लगती है।

उदाहरण के लिए भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के समय, 1947 में गायों की संख्या प्रति एक हज़ार व्यक्ति पर 456 थी, स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अनेक प्रान्तों में गायों के ज़बीहा पर पाबन्दी लगा दी गई, उपयोग कम हो गया, तो कुदरत ने भी गायों की पैदावार में कमी कर दी। जिसके नतीजे में वर्ष 1960 में प्रति एक हज़ार व्यक्तियों पर 399 गाय रह गई फिर वर्ष 1972 में यह संख्या घट कर 281 हुई, वर्ष 1982 में 236 गाय और 1994 में केवल 112 गाय ही प्रति एक हज़ार व्यक्तियों पर, भारत में रह गई।

14 जनवरी 1996 को टाइम्स ऑफ इण्डिया की रिपोर्ट के अनुसार डेरी इंस्टीट्यूट कानफ्रेंस में बोलते हुए भूतपूर्व डायरेक्टर प्रोफेसर एस0एन0 मिश्रा ने साफ़ शब्दों में कहा था कि गाय के ज़बीहा पर पाबन्दी लगा देने से भारत में दूध उद्योग को बड़ा धक्का लगा है यह पाबन्दी राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए लगाई गई है, इस का हटना सम्भव नहीं है मगर इसके कारण

डेरी उद्योग के नुकसान का ख़तरा है। प्रो0 एस0एन0 मिश्रा ने कहा था कि बूढ़ी और बेकार गायें दूध देने वाली उपयोगी गायों के चारे में हिस्सा लगाती हैं, जब कि किसान उन्हें बेच कर अपनी आर्थिक स्थिति को मज़बूत कर सकता है।

मगर ज़बीहा पर पाबन्दी के कारण वह ऐसा नहीं कर पाता। इस अवस्था में किसान अपनी बूढ़ी बेकार गायों को छुट्टा छोड़ देता है जो "भूखी और बीमार हालत में इधर उधर भटकती फिरती हैं"। प्रोफेसर मिश्रा ने प्रश्न उठाया था कि यह क्रूरता नहीं तो और क्या है?

इसके अतिरिक्त गौर करने पर यह भी एक हक़ीक़त सामने आती है कि धरती के प्रत्येक क्षेत्र में बनस्पतियां अधिक मात्रा में नहीं उगतीं, वहां पर इंसान अण्डा, मांस, मछली इत्यादि न खाये तो भुखमरी फैल जाये। स्वयं हमारे देश में ऐसे इलाक़े मौजूद हैं। यह भी ग़ौर करने की बात है कि अगर शाक भाजी वाले इलाकों में भी सबके सब लोग शाकाहारी बन जायें और मांसाहार पूर्णतः छोड़ दें तो सब्ज़ियां वहां की कुल आबादी के लिए प्रयाप्त नहीं होगी।

अब शोध पुस्तक भगवान बुद्ध से एक नमूना देखें—

यह सत्य है कि बौद्ध धर्म के प्रचारकों ने मांसाहार के विरुध ज़बरदस्त अभियान चलाया था। मगर यह अभियान उस हिंसा के विरुध था, जिसमें उनके ज़माने में यज्ञ के नाम पर अंधाधुंद जानवरों को बलि चढ़ाया जाता था इन यज्ञों में दुधारू और उपयोगी जानवरों को भी ग़रीबों से ज़बरदस्ती छीन कर हज़ारों की संख्या में काट डाला जाता था। (पुस्तक भगवान बुद्ध पृ0 230—321 लेखक धर्मान्द कौसम्बी)।

श्री बी0 रामा स्वामी, चेयरमैन बुद्ध ट्रस्ट विश्व एकता सन्देश, सितम्बर 2001 के अंक में लिखते हैं कि हक़ीक़त यह है कि ब्राह्मणों द्वारा पशु बलि की अनुमति का नाजायज़ फ़ायदा उठाया जा रहा था। वैदिक ब्राह्मण अश्व मेघ यज्ञ सहित विभिन्न यज्ञों में गाय और बैल की खुलेआम बलि दिया करते थे बौद्ध धर्म के द्वारा अंधा धुंद पशु बलि के विरोध के कारण बौद्ध धर्म की बढ़ती लोकप्रियता को देख कर ब्राह्मणों ने गाय को पवित्र पशु और स्वयं को शाकाहारी घोषित कर दिया ताकि अपने समाज को बौद्ध धर्म कुबूल करने से रोका जा सके, हालांकि इससे पहले वे गौ मांस भक्षण के (खाने के) आदी थे।

वर्तमान समय में भी इस विवाद का कारण वही ब्राह्मण वादी मांसिकता है जिसके द्वारा अपने समाज को मुस्लिम समाज से दूर रखने की कोशिश की जा रही है। यदि खान पान में दोनों समाज के लोग एक टेबुल पर आ गए, जैसा कि आजकल हो रहा है तो धार्मिक उन्माद समाप्त हो जाना स्वाभाविक है जो कि ब्राह्मण वर्ग के लिए ज़िन्दगी और मौत का प्रश्न है।

❖❖❖

माँ की ममता

—मोलवी इस्माईल मेरठी

ममता माँ की जानते हैं सब
माँ है बच्चे की परवरिश का सबब

भूख बच्चे को सताती है जब
माँ से करता है रो के दूध तलब

दूध देती है प्यार करती है
जान उस पर निसार करती है

बच्चा सीने से जो रहा है चिमट
नहीं ले सकती बे धड़क करवट

पाँव की भी ज़रा न हो आहट
कभी नन्हे की जाए नीन्द उचट

ऊँ ऊँ करती थपकती जाती है
होले होले सरकती जाती है

जब गया वह निहालचे पर सो
छोटे तकिये लगादिये दो दो

किये सब काम, थे ज़रूरी जो
पर नहीं भूलती है बच्चे को

लेती रहती है माँ ख़बर हर दम
अपने बच्चे पे है नज़र हर दम

माँ को आराम की कहाँ फ़ुरसत
सोई बे ढब तो आ गई शामत

कपड़े लत्तों की हो गई क्या गत
है बिछौना भी तरबतर लतपत

सुब्ह उठकर खगांलती है तमाम
जाड़े पाले का वक़्त और यह काम

बच्चा इतने में चौंक उठा सो के
नाक में दम किया है रो रो के

माँ ने फिर ले लिया है खुश हो के
नया कुरता बदल के मुँह धो के

बातें करती है प्यार से जूँ जूँ
बोलता है जवाब में "आगूँ"

रात को लोरियाँ सुनाती है
गोद में ले के बैठ जाती है

किस क़दर ज़हमतें उठाती है
बच्चा है और माँ की छाती है

कभी कुण्डी बजा के बहलाया
कभी कन्धे लगा के टहलाया

माँ कुदाती उछालती है उसे
देखाती और भालती है उसे

हर तरह पर संभालती है उसे
अल्लाह आमीं से पालती है उसे

देख कर उसका चाँद सा मुखड़ा
भूल जाती है अपना सब दुखड़ा

जब लगाया है आँख में काजल
पड़ा बच्चे की तेवरियों में बल

दोनों आँखों को उसने डाली मल
बच्चा बेचैन है तो माँ बेकल

चुप किया झुन झुना बजा के उसे
सोई खुद पेशतर सुला के उसे

उसका हप्पा जुदा पकाती है
उँगलियों से उसे चटाती है

बातें करना उसे बताती है
पाओं चलना उसे सिखाती है

माँ को बच्चे से जो महब्बत है
दर हक़ीक़त खुदा की रहमत है

****

लौकिक त्रुटियाँ (अ़ग़लातुल अ़वाम)

—नज्मुस्साकिब अ़ब्बासी नदवी बी0ए0 बीएड

1. लोगों में मशहूर है कि गाली देने से आदमी चालीस दिन तक ईमान से दूर हो जाता है और अगर इस बीच मर जाए तो काफिर हो के मरता है। ये अकीदा बिल्कुल गलत है। हाँ! गाली देने का गुनाह पड़ेगा।

2. लोग मुमानी, चच्ची और सौतेली सास से निकाह को जायज नहीं समझते। ये अकीदा गलत है। मामू चचा, ख़ुसुर से अलाहिदगी के बाद उनसे निकाह दुरुस्त है। लिहाज की वजह से कोई इनसे निकाह न करे तो अलग बात है। (अगलातुल अवाम)।

3. मशहूर है कि कैंची न बजाओ, आपस में लड़ाई हो जाएगी। इसकी कोई हक़ीकत नहीं है।

4. बहुत से लोग औलिया–ए–किराम को हाजतरवा और मुश्किल कुशा समझकर इस नीयत से फातिहा व नियाज दिलाते हैं कि इनसे हमारे कारोबार में तरक्की होगी, माल व औलाद बढ़ेगी। रिज़्क बढ़ेगा और औलाद की उम्र बढ़ेगी। ये खुला हुआ शिर्क हैं इससे तुरन्त तौबा करनी चाहिए।

5. बहुत से लोग कब्रों पर चढ़ावा चढ़ाते हैं, मकसद उससे औलिया की कुरबत और रजामन्दी होती है और उनको अपना हाजतरवा समझते हैं। ये अकीदा शिर्क है और वह चढ़ावा खाना भी जायज नहीं है।

6. इसी तरह उर्स के ज़माने में बल्कि गैर उर्स में भी औलिया–ए–किराम के मजारों पर चादर चढ़ाते हैं जो मकरूह और फुजूलखर्ची है और अवाम का जो इसमें अकीदा (आस्था) है, वह बिल्कुल शिर्क है। फिर गजब ये कि इसकी नज़्र व मन्नत मानी जाती है। कुछ लोग दूर–दराज से सफर करके अपने बच्चों की चिल्ला–छट्ठी वहाँ करते हैं और नज़्र पूरी करते हैं। बहुत से लोग जादू–टोना और आसेब उतरवाने के लिए आते हैं। इसी तरह से बहुत से लोग वहां चिराग रौशन करते हैं, कब्रें पुख़्ता बनाते हैं। ये सब ग़ैर शरई बातें हैं।

7. बहुत से लोग ये अकीदा रखते हैं कि शबे बरात वगैरह में मुर्दों की रूहें घरों में आती हैं और देखती हैं कि किस–किस ने हमारे लिए कुछ पकाया है या नहीं। ये अक़ीदा बिल्कुल झूठा और बातिल है।

8. बहुतों का अक़ीदा ये है कि अगर कोई इस रात में मुर्दों को सवाब न बख़्शे तो रूहें कोसती हुई जाती हैं। ये अक़ीदा गलत है।

9. बहुत से लोग (शबे बरात के हलवे के बारे में) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दाँत शहीद हुआ था तो आपने हलवा खाया था, ये मनगढ़न्त किस्सा है। इस पर अकीदा रखना नाजायज़ है और ऐतिहासिक रूप से भी गलत है, क्योंकि दाँत शहीद होने की घटना शव्वाल में हुई थी और शबे बरात तो शाबान में मनाया जाता है। ◆◇◆

नारी और क़ुरआन

—डॉ0 फ़रहत हुसैन

महिलाएं हमारा आधा संसार हैं। दुर्भाग्य से उनके मामले में पुरुष प्रधान समाज संतुलित दृष्टिकोण नहीं अपना सका। कभी उसे 'पाप जननी' 'नरक का द्वार' 'मूर्ख' कुमार्गगामी बनाने वाली' कहा गया। कभी नारी स्वतंत्रता के नाम पर उसे उसके कर्मस्थल, घर परिवार, से निकालकर क्लब, फैक्ट्री, सिनेमा और राजनीति में पहुंचाया तथा दोहरा शोषण किया। इस्लाम ने नारी के प्रति पूर्ण संतुलित एवं स्वाभाविक दृष्टिकोण अपनाया। उसके कलंकों को धोया, उसे सम्मानजनक स्थान पर आसीन किया उसकी इज़्ज़त आबरू की रक्षा की उसे आर्थिक अधिकार प्रदान किए। उसके घर को उसकी वास्तविक कर्मस्थली बताकर उसे बाहरी जगत के दबाव, तनाव और पीड़ाजनक भागदौड़ से मुक्ति दिलायी ताकि वह एकाग्र मन से नई नस्ल को सुधार सके। कुरआन की इस विषय में सम्बंधित मुख्य आयतों के अनुवाद को यहां प्रस्तुत किया जा रहा हैं अधिक जानकारी के लिए पवित्र कुर्आन, हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के कथनों और तथा इस्लामी इतिहास का अध्ययन उचित होगा।

नारी सुख शान्ति तथा प्रेम की प्रतीकः-

"ईश्वर ने तुम्हारे लिए स्वयं तुम ही में से जोड़े पैदा किए ताकि तुम उनके पास सुख चैन पाओ, तथा तुम्हारे बीच प्रेमभाव तथा दयालुता रख दी।" (30:21)

स्त्री पुरूष की वस्त्र से उपमा-

"तुम्हारी पत्नियां तुम्हारे लिए वस्त्र समान हैं और तुम भी उनके लिए वस्त्र समान हो।" (2:187)

आशय यह है कि पति—पत्नी वस्त्र की भांति एक दूसरे के लिए शोभा, सहायक और बुराई के प्रति कवछ हैं।

समान अधिकार-

"महिलाओं के भी वैसे अधिकार हैं, जैसे उनके प्रति पुरुषों के हैं, हां पुरुषों को उनके ऊपर एक दर्जा प्राप्त है।" (2:228)

समान अधिकार देते हुए पारिवारिक प्रबंध व्यवस्था के लिए पुरुष को घर के मुखिया के नाते मात्र एक श्रेणी की उच्चता दी है। पुरुष को स्त्री का स्वामी और स्त्री को दासी नहीं बनाया। एक दूसरे स्थान पर संरक्षक बताया गया है—

"मर्द औरतों के संरक्षक हैं क्योंकि ईश्वर ने उन्हें अधिक सामर्थ्य दिया है तथा इसलिए भी की वे अपना माल खर्च करते हैं।"

जायदाद में हिस्सा-

"पुरुषों का उस माल में हिस्सा है जो उनके माता पिता तथा नातेदारों ने छोड़ा हो और स्त्रियों का भी उसमें हिस्सा है जो उनके माता पिता तथा नातेदारों ने छोड़ा हो।" (4:07)

महर (विवाह धन) की प्राप्ति-

"विवाह के समय स्त्रियों को उनका महर निश्चित रूप से अदा करो..।" (4:04)

विवाह के समय पारस्परिक सहमति से तय की गयी रक़म पति द्वारा पत्नी को देना अनिवार्य है। जायदाद के अधिकार, यह महर की प्राप्ति आदि से नारी आर्थिक रूप से स्वावलंबी रहती है।

माँ का रुतबा–

"हमने इंसान को ताकीद की कि वह अपने माता–पिता से उत्तम व्यवहार करे। उसकी मां ने कष्ट पर कष्ट सहन कर उसे गर्भ में रखा और पीड़ा के साथ उसे जना...." (46:15, 31:14)

बेटी के जन्म पर अप्रसन्नता व्यक्त करने की निन्दा–

"जब उनमें से किसी को कन्या शिशु के जन्म की खुशखबरी दी जाती है तो उसके चेहरे पर कलौंस छा जाती है और वह दुख से घुटने लगता है।" (16:58)

यहां इस्लाम ने पूर्व अरबवासियों की बेटियों के बारे में सोच का चित्रण किया है जिसे इस्लाम ने पूर्णता से बदल दिया और कन्या के जन्म को शुभ समझा जाने लगा।

शिशु हत्या–कन्या हत्या जघन्य अपराध–

"निर्धनता के डर से अपनी औलाद को क़त्ल न करो हम उन्हें भी आजिविका प्रदान करते हैं और तुम्हें भी। वास्तव में उनकी हत्या एक जघन्य अपराध है।" (17:31)

कन्या शिशु से छुटकारा पाने की समाज की कुप्रथा भी अपराध है जो इस्लाम पूर्व अरब समाज में व्याप्त थी भारत में आज भी पायी जाती है, हजरत मुहम्मद सल्ल0 ने कठोर शब्दों में इसकी निंदा की तथा बेटियों के पालन पोषण को पुण्य का कार्य बताया। कन्या शिशुओं से छुटकारा पाने के लिए भ्रूण परीक्षण करा कर गर्भपात कराने का चलन बढ़ रहा है इस्लाम इस कृत्य को भी जघन्य अपराध मानता है। कन्या वध के मामले में कहा गया–

"उस समय को याद करो जब ज़िन्दा दफ़न की गयी कन्या से पूछा जाएगा कि किस कुसूर में तुझे मार डाला गया।" (8:8–9)

अपराध इतना क्रूरता पूर्ण और स्पष्ट है कि अपराधी से कुछ पूछने के बजाए, क़यामत में उसी बच्ची से कहा जाएगा कि तेरा कुसूर क्या था, मात्र यह कि तू एक कन्या थी।

झूठा लांछन लगाने वाला कठोर दण्ड का भागी–

"जो लोग पाक दामन औरतों पर दोषारोपण करें परन्तु चार गवाह प्रस्तुत न कर सकें उनके अस्सी कोड़े लगाओ और कभी उनकी गवाही स्वीकार न करो, वही अवज्ञाकारी हैं।" (24:4)

इस्लामी क़ानून में सामान्यतः दो व्यक्तियों की गवाही प्र्याप्त मानी जाती है इसलिए कुरआन के अध्याय 4 आयत 15 द्वारा इसके लिए चार गवाहों का प्रावधान किया गया। गवाहों के अभाव में यदि मुक़दमे की फ़ाइल यूंही बन्द कर दी जाए तो आरोपित महिला पर बदनामी का दाग़ बना रहता है। इसलिए उपरोक्त क़ानून द्वारा झूठे लांछन के विरुद्ध नारी की अति उत्तम सुरक्षा की गयी।

चरित्र हनन निन्दनीय कार्य–

"जो लोग पाकदामन भोली–भाली ईमानवाली औरतों के चरित्र पर झूठा लांछन लगाते हैं उन पर धिक्कार है दुन्या में और परलोक में, तथा उनके लिए घोर यातना है।" (24:23)

"जो लोग ईमान वाले पुरुषों तथा स्त्रियों पर झूठे लांछन लगा कर उन्हें दुख पहुंचाते हैं उन्होंने अपने को इस लांछन और खुलेपाप के बोझ का अधिकारी बना लिया है।" (33:58)

स्त्रियां खेती की भांति–

"तुम्हारी स्त्रियां तुम्हारी खेतियां हैं। तुम्हें अधिकार है जिस प्रकार चाहो अपनी खेती में जाओ, मगर अपने भविष्य की चिन्ता करो और ईश्वर की अप्रसन्नता से बचो।" (2:223)

मासिक धर्म–

"पूछते हैं– मासिक धर्म के बारे में क्या आदेश है? कहो वह एक गन्दगी की दशा है, उसमें अपनी पत्नियों से अलग रहो जब तक कि वे स्वच्छ न हो जाएं।" (2:222)

वैचारिक सामंजस्य ज़रूरी–

तुम मुश्रिक (बहुदेव–वादी) स्त्रियों से कदापि विवाह न करना जब तक कि वे ईमान न ले आएं। एक आस्थावान दासी, मुश्रिक कुलीन महिला से बेहतर है चाहे वह तुम्हें पसन्द हो। और अपनी स्त्रियों का विवाह बहुदेववादी पुरुषों से कभी न करना जब तक कि वे ईमान न ले आएं। एक ईमान वाला गुलाम मुश्रिक पुरुष से बेहतर है, यद्यपि वह तुम्हें बहुत प्रिय हो।" (2:221)

आस्था के आधार पर मतभेद दाम्पत्य जीवन के आनन्द को कड़वाहट में बदल देते हैं।

तलाक़ अन्तिम उपाय के रूप में– "जो लोग अपनी पत्नियों से न मिलने की क़सम खा बैठें उनके लिए अधिकतम चार महीने की मोहलत है। फिर यदि वे मेल कर लें तो अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील और दयावान है। और यदि वे तलाक की ठान लें तो अल्लाह सुनने और जानने वाला है।" (2:266, 227)

पति पत्नी में गम्भीर मतभेद हो जाए तो मेल कराने और पंचनिर्णय की प्रक्रिया कुरआन में बतायी गयी है। जिसमें दोनों ओर के प्रतिनिध फैसला करते हैं (देखें 4:35)। मेल न होने की दशा में तलाक़ एक अन्तिम उपाय के रूप में है। औरत को भी तलाक़ लेने का अधिकार प्राप्त है। (देखें 2:229) अगर तलाक़ देनी हो तो पूर्ण विचार करके उसकी निर्धारित प्रक्रिया अपना कर दी जाए। अन्तिम उपाय को शुरु में ही जल्दबाज़ी में प्रयुक्त करना अनुचित है।

महिलाओं के प्रति अपराधों की रोकथाम की व्यवस्था–

"ऐ नबी ईमान वाले मर्दों से कह दीजिए कि वे अपनी दृष्टि बचा कर रखें और अपनी इन्द्रियों की रक्षा करें.... और ईमान वाली औरतों से कह दीजिए कि वे भी अपनी निगाहें बचा कर रखें और अपनी इन्द्रियों की

रक्षा करें और अपने श्रृंगार का प्रदर्शन न करें सिवाय उसके जो स्वयं प्रदर्शित हो जाये, और अपने सीने पर अपनी ओढ़नी डाले रखें, और अपने पांव ज़मीन पर मारती हुई न चला करें कि जो श्रृंगार उन्होंने छिपा रखा है वह प्रकट हो जाए।" (24:33–31)

महिलाओं के विरुद्ध अपराधों का मुख्य कारण लोगों में संयम का अभाव तथा औरतों का बन ठन कर अपनी सुन्दरता की नुमाइश है, यहां इसी से रोका गया है।

"अपने घरों में ठहरो शालीनता के साथ और अज्ञानकाल की भांति अपनी सज–धज दिखाती न फिरो।"

(33:33)

"ऐ नबी अपनी पत्नियों, पुत्रियों तथा अन्य आस्थावान स्त्रियों से कह दीजिए कि जब वे बाहर निकलें तो अपनी चादरों के पल्लू अपने ऊपर लटका लिया करें ताकि (कुलीन व सम्मानित स्त्रियों के रूप में) पहचान ली जाएं और सतायी न जायें।" (33:59)

"जब उनसे कोई चीज़ मांगो तो परदे के पीछे से मांगो, यह तुम्हारे व उसके दिलों की शुद्धता के लिए है।" (33:53)

"(जब किसी बाहरी व्यक्ति से बात करनी हो तो) खुर्रे स्वार में साफ़ बात करो ताकि यदि उस व्यक्ति के मन में खोट हो तो वह तुम्हारी ओर से किसी भ्रम में न पड़े।" (33:32)

"ईमान वालो तुम अपने घरों के अतिरिक्त दूसरों के घरों में अनुमति के बग़ैर प्रवेश न करो।" (24:27)

"व्यभिचार के निकट भी न जाओ यह अशलील कार्य और अत्यन्त बुरा मार्ग है।" (17:32)

"अपनी दासियों को संसारिक लाभ हेतु वेश्यावृत्ति पर मजबूर न को।" (24:32)

नारी स्वतंत्रता, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, सेक्स एजुकेशन आदि के नाम पर जो अशलीलता फैलाई जा रही है उसके परिणामस्वरूप महिलाओं और किशोरियों के विरुद्ध जघन्य अपराधों में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। फिल्मों, टी0वी0 कार्यक्रमों तथा विज्ञापनों में अशलीलता पर सुप्रीमकोर्ट ने भी आपत्ति जतायी है। इस परिप्रेक्ष्य में उपरोक्त कुरआनी संदेश/निर्देश/आदेश बहुत प्रासांगिक हैं।

दाम्पत्य जीवन में व्यावहारिकता न कि भावुकता–

स्त्रियों के साथ अच्छे ढंग से जीवन यापन करो। यदि तुम्हें वे नापसन्द हों तो हो सकता है कि एक चीज़ तुम्हें पसन्द न हो मगर अल्लाह ने उसमें बहुत भलाई रख दी हो।" (4:19)

एक से अधिक पत्नियों की सशर्त अनुमति–

"....तो स्त्रियों में से जो तुम्हारे लिए जायज़ हों दो–दो, तीन–तीन, चार–चार तक विवाह कर लो। परन्तु यदि तुम्हें डर हो कि न्याय न कर सकोगे तो फिर एक ही पत्नी पर बस करो।" (4:03)

युद्ध आदि में पुरुषों की संख्या कम होना, पत्नी की शारीरिक अक्षमता, बांझपन,

पुरुष की असाधारण परिस्थिति अर्थात किसी हंगामी आवश्यकता के लिए बहुपत्नीत्व की अनुमति न्याय की शर्त के साथ दी गयी है। इन आदेशों से पूर्व अनगिनत पत्नियों का रिवाज था उसे समाप्त करके अधिकतम सीमा चार निश्चित कर दी गयी।

(कान्ति सितम्बर 2015 से ग्रहीत)

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी.....

जुमे के दिन दुरूद की कसरतः-

हज़रत औस बिन औस से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जुमे का दिन सब दिनों से ज़ियादा अफ़ज़ल है तो जुमे के दिन मुझ पर कसरत से दुरूद भेजो तुम्हारा भेजा हुआ दुरूद मुझ को पेश किया जायेगा, लोगों ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारा दुरूद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर किस तरह पेश होगा आपका जिस्म मुबारक तो बोसीदा (जीर्ण) हो चुका होगा, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन पर अंबिया के जिस्म को हराम किया हैं। (अबू दाऊद)

आप सल्ल0 का नाम सुन कर दुरूद न भेजने वाले के लिए वअ़ीदः-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया उस आदमी की नाक खाक आलूद हो जिस के सामने मेरा जिक्र किया जाये और वह मुझ पर दुरूद न भेजे।

(तिर्मिजी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मेरी क़ब्र को मेला न बनाओ और मुझ पर दुरूद भेजो वह मुझ को पहुंच जायेंगे तुम कहीं भी हो।

(अबूदाऊद)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो मुझ को सलाम करता है तो अल्लाह तआ़ला मेरी रूह को मुझ पर पलटाता है, यहां तक कि मैं उसके सलाम का जवाब देता हूँ (अबूदाऊद)

हज़रत अली रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया वह बखील है जिसके सामने मेरा जिक्र किया जाये और वह मुझ पर दुरूद न भेझे। (तिर्मिजी)

दुन्या के लिए इल्मे दीन हासिल करने की सज़ाः-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिस आदमी ने वह इल्म जिससे अल्लाह की खुशनूदी हासिल की जाती है उसको दुन्या के किसी लाभ के लिए सीखा तो कियामत के दिन वह आदमी जन्नत की खुशबू भी न पायेगा। (अबू दाऊद)

❖❖❖

—प्रस्तुति—

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

उर्दू सीखिये

—इदारा

सामने लिखे हिन्दी की मदद से उर्दू जुम्ले पढ़िये।

सुब्ह को जल्द उठिये	صبح کو جلد اٹھیے
पाख़ाना पेशाब से फ़ारिग़ होईये	پاخانہ پیشاب سے فارغ ہوئیے
वुज़ू करके पाकी हासिल कीजिए	وضو کرکے پاکی حاصل کیجیے
मस्जिद जा कर सुन्नतें पढ़िए	مسجد جاکر سنّتیں پڑھیے
जमाअ़त का इन्तिज़ार कीजिए	جماعت کا انتظار کیجیے
जमाअ़त से फर्ज़ पढ़िए	جماعت سے فرض پڑھیے
थोड़ी देर तिलावत कीजिए	تھوڑی دیر تلاوت کیجیے
कुछ वरज़िश कीजिए	کچھ ورزش کیجیے
दस मिनट दौड़ लगाइये	دس منٹ دوڑ لگائیے
या पन्द्रह मिनट तेज चलिए	یا پندرہ منٹ تیز چلیے
नाश्ता करके चाय पीजिए	ناشتہ کرکے چائے پیجیے
तालिबे इल्म हों तो मदरसा जाइये	طالب علم ہوں تو مدرسہ جائیے
या अपने कारोबार में लगिये	یا اپنے کاروبار میں لگیے
बड़ों का अदब कीजिए	بڑوں کا ادب کیجیے
बड़ों को सलाम कीजिए	بڑوں کو سلام کیجیے
छोटों पर शफ़्क़त कीजिए	چھوٹوں پر شفقت کیجیے
छोटों को भी सलाम कीजिए	چھوٹوں کو بھی سلام کیجیے
कहिए अस्सलामु अ़लैकुम	کہیے السلام علیکم
सलाम का जवाब दीजिए	سلام کا جواب دیجیے
व अ़लैकुमुस्सलामु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू	وعلیکم السلام ورحمۃ اللہ وبرکاتہ
किसी को तक्लीफ न दीजिए	کسی کو تکلیف نہ دیجیے
हर एक से अख़्लाक़ से मिलिए	ہر ایک سے اخلاق سے ملیے
बुरी सुहबत से दूर रहिए	بری صحبت سے دور رہیے